ISSN 2394-8485

मासिक

गुरमत ज्ञान

३/-

पौष-माघ संवत् नानकशाही ५५३ जनवरी 2022 वर्ष १५ अंक ५

तख़्त श्री हरिमंदर जी, पटना साहिब (बिहार)

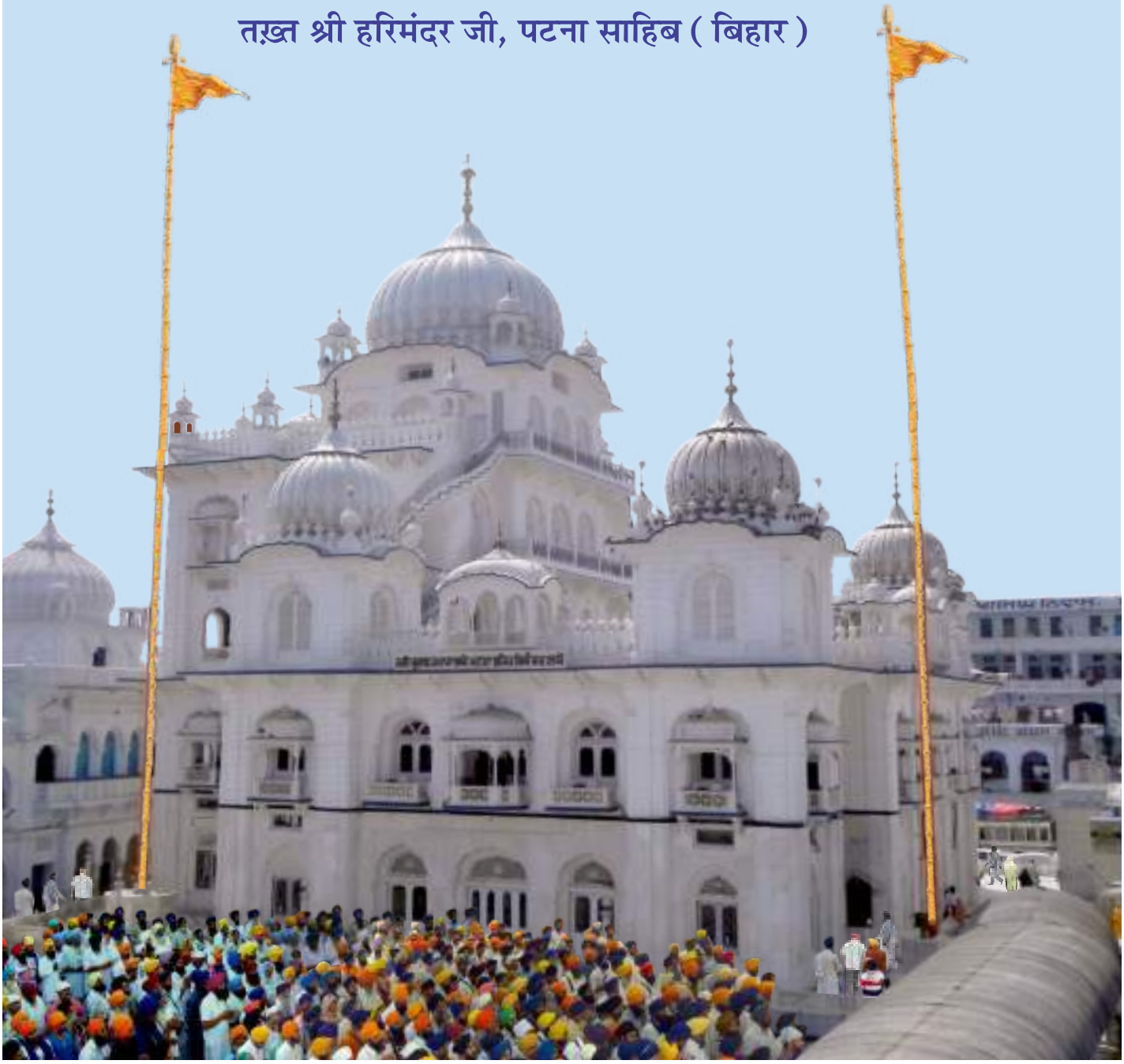

गुरुद्वारा श्री दरबार साहिब, श्री मुक्तसर साहिब
(टुट्टी गंढी साहिब)

ISSN 2394-8485

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक

गुरमत ज्ञान

पौष–माघ, संवत् नानकशाही 553
वर्ष 15 अंक 5 जनवरी 2022

मुख्य संपादक : सिमरजीत सिंघ
संपादक : सतविंदर सिंघ
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ

चंदा	
सालाना (देश)	10 रुपये
आजीवन (देश)	100 रुपये
सालाना (विदेश)	250 रुपये
प्रति कापी	3 रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर साहिब- 143006
फोन : 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग 303 संपादकीय विभाग 304
फैक्स : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय–सूची

गुरबाणी विचार 4
संपादकीय 5
आध्यात्मिक राज के सृजक : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी 7
–डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ
श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी : महान् एवं आदर्श विभूति 14
–डॉ. राजेंद्र सिंघ 'साहिल'
मानवता के संरक्षक : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी 18
–प्रिं. डॉ. इंदर सिंघ पटियाला
. . . श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का विलक्षण योगदान 23
–डॉ. मनजीत कौर
मानवी चेतना के ज्योति–पुंज : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी 27
–स. हरचरन सिंघ
श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी : सामाजिक सरोकार 3०
–डॉ. तेजिंदर पाल सिंघ
. . . श्री मुकतसर साहिब की जंग का इतिहास 38
–प्रो. किरपाल सिंघ बडूंगर
खत्रीआ त धरमु छोडिआ 43
–स. किरपाल सिंघ
जिन प्रेम कीओ तिन ही प्रभ पाइओ 48
–डॉ. परमजीत कौर
'अकाल उसतत' बाणी का आध्यात्मिक पक्ष 53
–बीबी गुरप्रीत कौर
ख़बरनामा 59

गुरबाणी विचार

माघि मजनु संगि साधूआ धूड़ी करि इसनानु ॥
हरि का नामु धिआइ सुणि सभना नो करि दानु ॥
जनम करम मलु उतरै मन ते जाइ गुमानु ॥
कामि करोधि न मोहीऐ बिनसै लोभु सुआनु ॥
सचै मारगि चलदिआ उसतति करे जहानु ॥
अठसठि तीरथ सगल पुंन जीअ दइआ परवानु ॥
जिस नो देवै दइआ करि सोई पुरखु सुजानु ॥
जिना मिलिआ प्रभु आपणा नानक तिन कुरबानु ॥
माघि सुचे से कांढीअहि जिन पूरा गुरु मिहरवानु ॥१२॥ *(पन्ना १३५)*

पंचम गुरु श्री गुरु अरजन देव जी महाराज बारह माहा मांझ बाणी की इस पावन पउड़ी में पुरातन काल से चली आ रही माघ महीने में तीर्थ-स्नान की परंपरा की पृष्ठभूमि में मनुष्य-मात्र को परमात्मा के सच्चे नाम-सिमरन का सहारा लेते हुए वास्तविक आत्मिक विकास के लिए गुरमति महामार्ग बख्शिश करते हैं।

सतिगुरु जी फरमान करते हैं कि हे मनुष्य! तेरे लिए वास्तविक लाभ लेने का रास्ता यही है कि माघ के महीने में तू नेक जनों— गुरमुखों की संगत कर। उनसे मिलकर प्रभु-नाम के महत्त्व पर विचार कर। तू गुरमुखों के साथ परमात्मा के नाम की स्तुति रूपी धूल का स्पर्श कर। यही तेरा स्नान है। तू माघ माह में परमात्मा का नाम स्मरण कर और यह अपने तक ही सीमित न रख। परमात्मा द्वारा मिली इस अनमोल दात (बख्शिश) को आगे भी वितरित कर। यहां समझने योग्य विचार-बिंदु यह है कि गुरमति में अकेले में प्रभु-नाम-चिंतन करने की बजाय संगत में जाकर चिंतन-मनन करने का अधिक महत्त्व माना जाता है।

सतिगुरु पातशाह कथन करते हैं कि हे मानव! यह ऐसा कारगर ढंग है कि इससे मन पर चढ़ी हुई कई जन्मों में किए दुष्कर्मों की मैल उतर जाएगी और तेरे मन से अहंकार चला जाएगा। काम और क्रोध के नुकसानदेय विकारी भाव तुझ पर भारी (हावी) नहीं रहेंगे। न ही मोह तंग करेगा और लालच रूपी कुत्ता भी तुझे दर-दर नहीं भटकाएगा। सच्चे मार्ग पर चलने से तेरा अपना आत्मिक लाभ तो है ही, संसार भी तेरी शोभा का गुणगान करेगा। अठसठ तीर्थों के स्नान से प्राप्त किए जाने वाले जो पुण्य गणना में आते हैं वे जीवों पर दया-भाव प्रकट करने से स्वत: मिल जाते हैं अर्थात् माघ महीने में हे मनुष्य! तुझे हिंसक व्यवहार को छोड़ना होगा।

सतिगुरु जी फरमान करते हैं कि जिस मनुष्य को नेक-जनों की संगत प्रभु स्वयं प्रदान कर देता है वह मनुष्य वास्तव में बुद्धिमान है। जिनको अपना मूल स्रोत परमात्मा मिल गया, मैं उन पर सदके जाता हूं। माघ महीने में जिन पर पूरा गुरु कृपालु होता है वे भाग्यशाली लोग मात्र बाहरी स्नान से नहीं, बल्कि रूहानी स्नान करने से स्वच्छ होते हैं।

संपादकीय

आओ, श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की निर्मल अवधारणा के धारक बनें!

दसम पातशाह साहिब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी महाराज का मातृ लोक में प्रकट होना तीव्र प्रताप वाले सूर्य के चमकने के तुल्य था। इस सूर्य की तेज रौशनी ने कुल दुनिया के अंधेरे कोनों में भी प्रकाश भर दिया। जब तक प्रभु-सृजित सृष्टि अस्तित्व में है, इस अद्वितीय सूर्य को नमन होता रहेगा। इस सच्चाई को श्री गुरु नानक नाम-लेवा सिक्ख ही नहीं, बल्कि सारी दुनिया के निष्पक्ष दृष्टि और धार्मिक कट्टरता के प्रभाव से रहित विचारवान एवं विद्वान नि:संकोच स्वीकार करते हैं।

संसार पर अब तक अनगिनत महापुरुष हो चुके हैं, जिनकी अपने-अपने युग को आगे ले जाने में ऐतिहासिक भूमिका रही, मगर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपने युग को शुरू से ही पलटा दिया। अब तक गुरु जी के बारे में उच्च कोटि के कलमकारों ने बहुत अच्छा लिखा है, लेकिन ज्यादातर ने यह भी माना है कि गुरु जी से सम्बन्धित लिखना उनकी कलम के सामर्थ्य में नहीं है। ऐसे कलमकारों में अल्लाह यार खान योगी और लाला दौलत राय जैसे भी शामिल हैं। गुरु नानक नाम-लेवा सिक्ख पंथ को गुरु जी ने १७५६ बिक्रमी की वैसाखी वाले दिन श्री अनंदपुर साहिब की धरती पर पाँच प्यारों का चयन कर खालसा पंथ नामक शिखर पर पहुँचाया। उस राजतांत्रिक युग में गुरु जी ने जिस रूप में खालसा पंथ को सर्वसमर्थ अधिकारों से मालामाल किया, वह दुनिया भर में एक अति अनोखी और विलक्षण घटना थी। पाँच प्यारों को ''सिरु धरि तली गली मेरी आउ'' की कसौटी पर परख कर गुरु-रुतबे से भी कहीं अधिक मान-सम्मान प्रदान किया। गुरु जी ने ख़ुद पाँच प्यारों के समक्ष अमृत-पान कराने की विनती की तो एक बार पाँच प्यारे भी गहरी सोच में डूब गए कि क्या उनमें अपने गुरु को अमृत प्रदान करने की सामर्थ्य है! ये दशमेश गुरु जी ही थे, जिन्होंने उन्हें पूर्ण एहसास कराया कि खालसा पंथ अकाल पुरख की महान इच्छा के अनुरूप ही प्रकट हुआ है और यह सर्व शक्तियों से अनुगृहीत किया गया है। इस प्रकार गुरु जी ने पाँच प्यारों से अमृत-पान किया और श्री गुरु गोबिंद राय जी से श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी बने। भारत में सदियों से तथाकथित उच्च जाति वाले लोगों द्वारा दुत्कारे, दबे-कुचले तथाकथित निम्न जाति के लोगों को हीन भाव से पूरी तरह से

मुक्त कर उन्हें शस्त्रबद्ध करना और महान योद्धा बनाना मात्र साहिब -ए-कमाल दशम पातशाह के ही हिस्से आ सकता था। गुरु जी ने अपना यह मूल जीवन-मनोरथ बड़े स्पष्ट रूप से अपनी बाणी 'बचित्र नाटक' में दर्शाया है। विदेशी शासकों-प्रशासकों के ज़ुल्म का मुँहतोड़ जवाब देकर उनके अहंकार को चकनाचूर कर देना गुरु जी का ही कमाल था। इस तरह के कारनामे करने के पीछे जहां गुरु जी की अद्वितीय दैवी और करिश्माई प्रतिभा क्रियाशील दिखाई देती है, वहीं अकाल पुरख द्वारा प्रदत्त बाहरी रूप से अति अल्प दिखाई देने वाली आयु के एक-एक दिन और एक-एक पल को पूर्ण सदुपयोग में लाना भी क्रियाशील रहा। सतिगुरु जी की जीवन-अवधि और उनकी जीवन-प्राप्तियों को आमने-सामने रखने से पाँचभूतक देह के धारक हरेक मनुष्य का हैरान हो जाना स्वाभाविक है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी महाराज की अद्वितीय प्रतिभा और बहुपक्षीय शख्सियत की उपमा उनके इस मातृ-लोक में प्रकट होने के समय से होती आ रही है, वर्तमान में भी हो रही है और आने वाले युगों में भी होती रहेगी। भारतीय अवाम के प्रतिनिधि के तौर पर पीर भीखन शाह जी गुरु जी के पटना साहिब में प्रकाश धारण करने (जन्म लेने) के अंत:स्वर से जान कर ज़िला करनाल से पटना साहिब के लिए रवाना हुए और बाल-गुरु जी की मनमोहक सूरत-सीरत की आभा पाकर ख़ुशनसीब बने। पीर जी ने दुनिया को बताया कि ये हिंदुयों और मुसलमानों के साझे गुरु होंगे। गुरु जी की ज़िंदगी भर की जद्दोजहद किसी मज़हब के ख़िलाफ़ नहीं बल्कि ज़ुल्म के ख़िलाफ़ रही। गुरु जी को अथाह प्यार करने वाले और उन्हें असीम सत्कार भेंट करने वालों में उनके जीवन-काल में भी अनगिनत मुसलमान थे और तब से लेकर आज तक अनेक हो चुके हैं। यह सिलसिला अनंत काल तक जारी रहेगा। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी महाराज के पवित्र प्रकाश गुरुपर्व को गुरमति भावना और विचारधारा के अनुरूप मनाते हुए हमें उनके द्वारा दर्शाए ज़ुल्म के विरुद्ध जद्दोजहद करने के रास्ते पर चलने का संकल्प लेना चाहिए। हमें गुरु जी के ''मानस की जात सबै एकै पहिचानबो'' जैसे पवित्र फ़रमान की दिशा में चलते हुए समूची मानवता के प्रति अपनी अवधारणा को निर्मल बनाने की दिशा में क्रियाशील होना चाहिए। गुरु जी के प्रकाश गुरुपर्व पर कट्टरवादी सोच का त्याग करना और सर्व-सांझीवालता के सरोकार को दृढ़ता के साथ अपनाना, व्यवहारिक रूप से अपने जीवन-ढंग में शामिल करना माता गुजरी जी के लाल के प्रकट होने की खुशियों को सही अर्थों में कई गुना बढ़ा सकता है।

आध्यात्मिक राज के सृजक : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी

*-डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ**

भट्ट सल्ह जी ने श्री गुरु रामदास जी की उपमा करते हुए उन्हें अटल राज (सदा स्थिर राज्य, शासन) का स्वामी और अखंड बल का धारक कहा है। भट्ट सल्ह जी ने कहा है कि श्री गुरु रामदास जी के ऊपर राज-सत्ता का प्रतीक छत्र झूल रहा है और संसार का शाश्वत सच ही उनका राज्य है, जो आत्म संकल्प व आनन्द अवस्था के बल से चल रहा है। भट्ट बाणीकारों को वह दृष्टि प्राप्त थी जिससे वे गुरु साहिबान के राज-तख्त और बल के दर्शन कर सके थे। श्री गुरु नानक साहिब में प्रकाशित ज्योति नौ अन्य गुरु साहिबान में प्रकट हुई, किन्तु किसी भी गुरु साहिब ने अपना भौतिक, भूगौलिक राज्य स्थापित नहीं किया। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने खालसा की साजना कर राज की इसी कल्पना को साकार किया। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने परमात्मा की सत्ता को ब्रह्मांड के सच्चे राज के रूप में देखा। श्री गुरु नानक साहिब ने परमात्मा के निराकार रूप से संसार को जोड़ा था। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने उस निराकार रूप में ही परमात्मा को साकार करने का कौतुक किया :

अचल मूरति अनभउ प्रकास
अमितोजि कहिज्जै ॥...१॥ (जापु साहिब)

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने कहा कि परमात्मा की सत्ता सदैव बनी रहने वाली है। उसे विचलित नहीं किया जा सकता। धरती पर बड़े-बड़े राजा-महाराजा आये। उन्होंने विशाल राज स्थापित किये, और अंततः चले गये। न वे रहे, न उनके राज। किन्तु परमात्मा का राज्य ऐसा नहीं है। गुरु साहिब ने कहा कि उसका राज हितकारी है और प्रभावकारी है। वह मात्र इस लोक का ही नहीं, तीनों लोकों का स्वामी है और सारी सृष्टि उसके अधीन है। निराकार परमात्मा की साकार सत्ता को स्वीकार करना श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की भक्ति का शिखर था। उन्होंने संसार को भी उस सत्ता के साथ जोड़ा और उस पर अटूट विश्वास रखना सिखाया। गुरु साहिब ने अपनी बाणी जापु साहिब में परमात्मा के निराकार रूप को साकार रूप में प्रकट करने का अनोखा ढंग अपनाया। उन्होंने जब कहा कि परमात्मा अकाल रूप है अर्थात् प्रकट नहीं है, उसके तुरंत बाद कहा कि वह अपने द्वारा संसार पर की जा रही कृपा के माध्यम से प्रकट हो रहा है। निराकार परमात्मा के दर्शन उसके द्वारा की जा रही कृपा में किये जा सकते हैं। ऐसा करने से उस पर विश्वास करना सरल हो

**ई-१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ-२२६०१७, फोन : ९४१५९-६०५३३, ८४१७८-५२८९९*

जाता है। गुरु साहिब ने कहा कि परमात्मा रूप से रहित है, फिर भी वह अपार सौन्दर्य वाला है। गुरु साहिब ने कहा कि परमात्मा सम्पूर्ण सौन्दर्य का अकेला प्रतीक है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने जहां सौन्दर्य की परिभाषा बदली वहीं उसको अनंत विस्तार भी प्रदान किया। संसार के लिये सौन्दर्य वह था, जो आंखों से दिखता था। गुरु साहिब ने कहा कि सौन्दर्य शाश्वत व सदा अनुभव करने का विषय है :

आदि रूप अनादि मूरति
अजोनि पुरख अपार ॥
सरब मान त्रिमान देव अभेव आदि उदार ॥
सरब पालक सरब घालक
सरब को पुनि काल ॥
जत्र तत्र बिराजही
अवधूत रूप रसाल ॥७९ ॥ (जापु साहिब)

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने परमात्मा के निराकार रूप की अतुल अवधारणा प्रस्तुत की है। उन्होंने निराकार परमात्मा के सौन्दर्य को सौन्दर्य के आदि व अंत के रूप में देखा। सौन्दर्य, गुण, महानता परमात्मा से ही आरंभ होती है और परमात्मा में ही संपूर्ण होती है। इसके साथ ही उसका अस्तित्व आदि से आरंभ होकर अनंत काल तक रहने वाला है। सृष्टि नहीं थी, तब भी परमात्मा था। यदि सृष्टि नहीं रहेगी, परमात्मा तब भी रहेगा। उसके गुणों और क्षमताओं का आकलन नहीं किया जा सकता। वह सबकी मर्यादा का रक्षक और स्वयं तीनों लोकों में धर्म की मर्यादा व सम्यक दृष्टि से सभी पर, बिना किसी भेदभाव के मूलत: कृपालु स्वभाव वाला है। वह सभी का पालनकर्त्ता, प्रेरित करने वाला व फिर अंत करने वाला है। गुरु साहिब ने परमात्मा का गहरा भेद बताते हुए कहा कि वह निर्लिप्त है, किन्तु फिर भी करुणा से भरा हुआ है। इस उदारता में ही उसका सौन्दर्य निहित है।

अपनी अनमोल बाणी जापु साहिब में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने कहा कि परमात्मा निराकार होते हुए भी प्रत्यक्ष रूप से प्रकाशित हो रहा है। इस तरह वह सभी को दर्शन देने वाला है। गुरु साहिब ने कहा कि परमात्मा तो हर किसी के सामने मौजूद है। वह बोलता भी है। गुरु साहिब ने कहा कि हर जीव में उसकी ही वाणी मुखर हो रही है। वह ज्ञान भी है और सौन्दर्य भी है :

कि साहिब दिमाग़ हैं ॥
कि हुसनल चराग़ हैं ॥. . . १५१ ॥

परमात्मा के गुणों का वर्णन करने के साथ ही श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने उसके इतने रूपों की चर्चा की जिनके बारे में पूर्व में कभी सोचा ही नहीं गया था। अपार, अनंत जैसे शब्दों से ही काम चला लिया जाता था। गुरु साहिब ने परमात्मा के विभिन्न रूपों की चर्चा ही नहीं की, हर रूप की वन्दना भी की है। वे कैसे परमात्मा को इतने रूपों में देख पाये, इसका उत्तर गुरबाणी में ही प्राप्त होता है :

एवडु ऊचा होवै कोइ ॥
तिसु ऊचे कउ जाणै सोइ ॥ (पन्ना ५)

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी परमात्मा को बड़ी निकटता से जान सके थे, क्योंकि वे स्वयं

परमात्मा का रूप थे। परमात्मा ने स्वयं उन्हें अपनी समस्त शक्तियों से समृद्ध किया था और धर्म की स्थापना के लिये संसार में भेजा था।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को परमात्मा ने अपने सुपुत्र के रूप में धर्म की स्थापना के महान उद्देश्य के लिये संसार में भेजा था। इससे अधिक महानता और नहीं हो सकती थी, किन्तु गुरु साहिब ने इसे बड़ी विनम्रता से लिया

विनम्रता : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी श्री गुरु नानक साहिब ज्योति के दसवें धारक व श्री गुरु तेग बहादर साहिब के सुपुत्र थे, किन्तु उन्होंने अपनी पहचान परम पुरख परमात्मा के दास के रूप में प्रकट की। जहां उनकी यह स्वयं की विनम्रता व निर्लिप्तता उनके ईश्वरीय गुणों का परिणाम थी वहीं गुरु साहिब ने संसार को भी यही राह दिखाई :

रे मन ऐसो कर संनिआसा ॥
बन से सदन सबै कर समझहु
मन ही माहि उदासा ॥ १ ॥

(शबद हजारे पातिशाही १०)

मन सदैव सहजता में रहे। राज- सिंहासन मिल जाये अथवा चाकरी करनी पड़े, मन की अवस्था सदा एक जैसी रहे। मन सहज रहता है, तभी अहंकार से निवृत्ति प्राप्त होती है और विनम्रता का स्थान बनता है। इसका सबसे आदर्श उदाहरण श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी हैं। अपने उपरोक्त उपदेश को गुरु साहिब ने स्वयं अक्षरश: सिद्ध कर दिखाया। जीवन भर परमात्मा की भक्ति व भावना उनके मन में एकरूप प्रकाशित होती रही। उस समय भी जब पाउंटा साहिब और श्री अनंदपुर साहिब में उनके शानदार दरबार सजा करते थे और उस समय भी जब चमकौर साहिब के युद्ध के बाद गुरु साहिब को अकेले माछीवाड़े के जंगल में भूखे, प्यासे पत्थर को सिरहाना बना कर रात गुजारनी पड़ी थी, भावना का वह प्रकाश रत्ती भर भी मद्धम नहीं हुआ था :

मित्र पिआरे नूं हाल मुरीदां दा कहणा ॥
तुधु बिनु रोगु रजाईआं दा ओढण
नाग निवासां दा रहणा ॥
सूल सुराही खंजर पियाला
बिंगु कसाईयां दा सहणा ॥
यारड़े दा सानूं सथरु चंगा
भठ खेड़िआं दा रहणा ॥ ४ ॥

(खिआल पातिशाही १०)

दो बड़े साहिबजादे— बाबा अजीत सिंघ जी व बाबा जुझार सिंघ जी एवं साथी सिक्ख चमकौर साहिब के भीषण युद्ध में शहीद हो चुके थे, परिवार बिखर गया था, अनंदपुर साहिब छूट चुका था, स्थान रात व्यतीत करने योग्य नहीं था, फिर भी मन में परमात्मा के लिये भावना का रंग उतना ही गहरा था, इसलिये सारी कठिनाइयां नगण्य हो गई थीं। गुरु साहिब ने कहा कि दुख और कष्ट तो तब होता यदि मन भटक कर परमात्मा से दूर चला गया होता।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने सन् १६९९ की वैसाखी वाले दिन जब 'पांच प्यारे' सजाये और उन्हें संगत में लाकर अमृत-पान कराया

तो इसका उद्देश्य उन्हें आत्मिक निर्मलता प्रदान करना था। वे 'खालसा' सम्बोधन पाकर निहाल हो गये। गुरु साहिब ने 'खालसा' को अपना रूप कहा। किसी को बहुत कुछ देने अथवा सब कुछ देने के उदाहरण तो अनेक थे, किन्तु अपना स्वरूप ही प्रदान कर देने का यह अनोखा उदाहरण पहला था, जो गुरु साहिब द्वारा अतिशय उदारता प्रकट करने वाला था। गुरु साहिब ने इससे भी आगे जाते हुए 'पांच प्यारों' के आगे करबद्ध नत्मस्तक होते हुए उन्हें स्वयं को अमृत-पान कराने की याचना की। वे स्वयं अमृत के दाता थे और अब स्वयं सारी संगत के सामने अमृत के याचक बन गये थे। वे गुरु थे और अपने ही शिष्यों के आगे शिष्य बन गये थे। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने गुरु और शिष्य का भेद ही मिटा दिया। वे स्वयं पातशाह थे। अब उन्होंने खालसा को पातशाही प्रदान कर दी, अपना सर्वस्व खालसा में निहित कर दिया।

गुरू खालसा मानीअहि,
परगट गुरू की देह।
जो सिख मो मिलबे चहिह,
खोज इनहु महि लेहु।२४।

(रहितनामा भाई प्रहिलाद सिंघ)

यह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की अतिशय विनम्रता थी कि उन्होंने एक ऐसी सत्ता को जन्म दिया जो उनका ही प्रतिरूप थी। क्योंकि गुरु साहिब स्वयं को परम पुरख परमात्मा के दास के रूप में देखते थे, इसलिये खालसा को भी परमात्मा के प्रति पूर्ण समर्पण का संस्कार दिया— *''खालसा सो जिन तन मन धन अकाल पुरख नूं सौंपिआ।''* यह स्व का विलुप्त हो जाना और परम तत्व का प्रकट हो जाना था। वह परम तत्व ही जीवन का उद्धारक है। उसकी कृपा के बिना मनुष्य द्वारा अर्जित की गई सारी उपलब्धियां निरर्थक हैं। 'त्व प्रसादि सवैये' बाणी, जो गुरसिक्ख के नितनेम अर्थात् प्रतिदिन पढ़ी जाने वाली बाणियों में शामिल है, में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने वचन किये कि संसार में भिन्न-भिन्न धर्मों, सम्प्रदायों के लोग हैं, जो अपनी मति के अनुसार धर्म का अध्ययन कर रहे हैं। बहुत-से वीर पुरुष हैं, देव व असुर हैं। सारे संसार में विभिन्न विचारधाराओं के लोग मिलते हैं, किन्तु कोई ऐसा नहीं मिला जो परमात्मा से मेल की कामना रखता हो। ऐसे सारे लोगों के किये जा रहे कर्म व्यर्थ हैं यदि परमात्मा की कृपा नहीं प्राप्त है। उस समय हाथी, घोड़े पालना शान का प्रतीक था। गुरु साहिब ने कहा कि किसी के सजे हुए शानदार हाथी हो सकते हैं, हवा से भी तेज दौड़ने वाले घोड़ों का दल हो सकता है, शीश झुकाने वाले बहुत शक्तिशाली राजाओं का समूह भी हो सकता है। यदि कोई ऐसा मनुष्य भी हो, फिर भी उसे नंगे पैर, खाली हाथ ही संसार से विदा होना पड़ता है। गुरु साहिब ने विशाल राज स्थापित करने वालों, धर्म-कर्म करने वालों, बहुत धार्मिक ज्ञान अर्जित करने वालों, युद्ध जीतने वाले वीरों का उदाहरण देते हुए कहा कि भले ही उन्हें स्वयं पर अभिमान हो और संसार में वे

सम्मान प्राप्त करें, किन्तु परमात्मा की कृपा के बिना यह सब व्यर्थ है। किसी की कोई महानता नहीं है, क्योंकि दाता मात्र परमात्मा है और सभी याचक हैं:

साहिबु स्री सभ को सिरनाइक
जाचक अनेक सु एक दिवय्या ॥६ ॥२६ ॥
(अकाल उसतत)

इस तरह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने एक परमात्मा की सत्ता स्थापित करते हुए सभी को, वे चाहे कितने बड़े राजा, महाराजा, धर्म के मर्मज्ञ, वीर, धनी थे, एक तल पर ला खड़ा किया था और स्वयं को भी उनमें शामिल कर गुरु व सिक्ख को एक दूसरे में अभेद कर दिया था। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के जीवन व बाणी दोनों में या तो परमात्मा के प्रति आभार उभर कर सामने आता है अथवा सिक्ख को दिया जाने वाला श्रेय। इसका कारण था— परमात्मा के प्रति प्रेम। गुरु साहिब ने कहा कि प्रेम ही परमात्मा से मेल का मार्ग है— ''साचु कहों सुन लेहु सभै जिन प्रेम कीओ तिन ही प्रभ पाइओ॥'' विनम्रता, दास-भाव व आभार की अवस्था में रह कर ही परमात्मा से प्रेम किया जा सकता है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा प्रेम की बात करना उन लोगों को भ्रम में डाल सकता है, जो गुरु साहिब के दर्शन सम्पूर्णता में कर सकने में असमर्थ हैं। उन्हें नहीं भूलना चाहिये कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी में श्री गुरु नानक साहिब की ही ज्योति प्रकाशित थी। उनके संसार-आगमन का मूल उद्देश्य धर्म का राज स्थापित करना था। उन्होंने शस्त्र धारण किये, जो उनके इस उद्देश्य में समय की आवश्यकता व अपरिहार्यता के अनुरूप सहायक सिद्ध हुए थे। उनके शस्त्रों व युद्धों के केंद्र में राज-सिंहासन नहीं, अधर्म का नाश और धर्म की रक्षा थे। गुरु साहिब ने युद्ध किसी योद्धा की तरह नहीं, एक समर्पित धर्म पुरुष की तरह लड़े। युद्ध में और युद्ध के बाद भी गुरु साहिब की आध्यात्मिकता ही प्रकाशित होती दिखती है। यह परमात्मा में उनकी अविचल आस्था को प्रकट करने वाली थी।

अविचल आस्था : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को जब चमकौर साहिब की कच्ची गढ़ी में वैरी की दस लाख फौज ने तलवारों के अतिरिक्त, बन्दूकों, तोपों के साथ घेर लिया, तब उनके साथ मात्र चालीस सिक्ख थे, जो थके हुए थे। उन्होंने सोचा भी नहीं था कि इस तरह युद्ध की स्थितियां बन जायेंगी। इसके बाद भी गुरु साहिब ने युद्ध का सामना किया, क्योंकि वे परमात्मा के प्रति आस्था और विश्वास से भरे हुए थे। उन्हें अटूट विश्वास था कि परमात्मा सदैव उनका सहायक है :

सभ संकट ते संत बचाए ॥
सभ संकट कंटक जिम घाए ॥
दास जान मुह करी सहाइ ॥
आप हाथु दै लयो बचाइ ॥ (बचित्र नाटक)

गुरु साहिब ने निराली बात कही। आपने कहा कि परमात्मा अपने भक्त की अपना दास समझ कर रक्षा करता है, क्योंकि दास का अपने स्वामी के अतिरिक्त कोई अन्य नहीं होता

है। स्वामी-परमात्मा को उसकी सहायता के लिये आना ही पड़ता है। वह आगे बढ़ कर अपने दास की रक्षा करता है। उसकी कृपा होती है तो बड़े से बड़े कंटक भी कांटे की तरह निकल जाते हैं और कोई क्षति नहीं होती। गुरु साहिब ने कहा कि परमात्मा सभी तरह के संकटों, दुखों से बचाता है और तन व मन का सुख प्रदान करता है। गुरु साहिब ने संसार को परमात्मा के न्याय में विश्वास दिलाते हुए कहा कि धर्म सदैव प्रफुल्लित रहने वाला है :

साध समूह प्रसंन फिरैं जग
सत्र सभै अवलोक चपैंगे ॥७ ॥२७ ॥
(अकाल उसतत)

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के जीवन में अनेक दुख आये, किन्तु उनके मन का सहज, विश्वास, प्रफुल्लता सदैव बनी रही। इसका कारण परमात्मा में उनका अटूट विश्वास था। मात्र नौ वर्ष की आयु में पिता श्री गुरु तेग बहादर जी को स्वयं बलिदान के लिये प्रेरित करना, बलिदान के बाद पिता का कटा शीश प्राप्त कर अपने हाथों से अंतिम संस्कार करना और तुरंत बाद सहजता से गुरुआई के दायित्वों के निर्वहन के लिये सचेष्ट हो जाना, परमात्मा की अतुल कृपा का ही कौतुक था। परमात्मा अंग-संग हो तो बड़े से बड़ा दुख भी कांटे की भांति निकल जाता है। गुरु साहिब ने जब खालसा की साजना की तो स्वयं अमृत तैयार किया था। अमृत तैयार करते हुए गुरु साहिब ने बाणियों का पाठ भी किया। इस तरह भौतिक क्रिया को आध्यात्मिकता से जोड़ कर उसे भी पावन कर दिया था। जब परमात्मा की टेक लेकर कोई कार्य किया जाये तो वह कार्य परमात्मा का कार्य बन जाता है। परमात्मा स्वयं उस कार्य को पूर्ण करता है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का तैयार किया खडे-बाटे का अमृत धर्म और मानवता के लिये संजीवनी सिद्ध हुआ और अकाल पुरख की ऐसी फौज तैयार हुई, जिसने आदर्श समाज की रचना को साकार किया। इस समाज का आधार परमात्मा की कृपा पर टिका था और परमात्मा की ही शोभा थी :

किऊ रा ग़रूर असत बर मुलकु माल ॥
व मा रा पनाह असतु यज़दां अकाल ॥ १०६ ॥
(जफरनामा)

'जफरनामा' श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा तत्कालीन मुगल बादशाह औरंगजेब को लिखा गया विजय-पत्र था। यह पत्र चमकौर साहिब के युद्ध तथा चारों साहिबजादों, माता गुजरी जी व बड़ी संख्या में सिक्खों की पावन शहादतों के बाद लिखा गया था। साधारण व्यक्ति के लिये यह विस्थापन, गहरे अवसाद और घोर निराशा की अवस्था बन जाती। बड़े-बड़े साधक, जती-सती कठिनाइयों के दौर में अपना सब्र खो देते आये थे, किन्तु श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की सहजता और संयम अद्वितीय था, क्योंकि उनके जैसा न कोई था और न कोई भविष्य में होने वाला है। इस अवस्था में भी श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ही औरंगजेब जैसे ताकतवर बादशाह को चुनौती दे सकते थे कि यदि तुम्हें अपने विशाल राज

और खजाने पर अभिमान है तो मुझे अपने परमात्मा की कृपा पर विश्वास है। यह एक तरह से आध्यात्मिक शक्ति द्वारा सांसारिक ताकत की हीनता घोषित करना और आत्म-बल की सर्वोच्चता स्थापित करना था। गुरु साहिब के इस बल और विश्वास के आगे औरंगजेब की सारी राजसी सत्ता बेदम, लाचार और बौनी साबित हो रही थी। औरंगजेब की अथाह राज-शक्ति श्री गुरु तेग बहादर साहिब के सामने भी पराजित हुई थी। श्री गुरु तेग बहादर जी ने शहादत का जो मार्ग चुना था, राज-शक्ति उसी मार्ग को चुनने को विवश हुई। अब जब औरंगजेब सिक्खों की ताकत को समाप्त करना चाहता था तो वह पूरी तरह से विफल रहा था, क्योंकि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की ताकत परमात्मा पर उनका विश्वास था, जिसके लिये वे संसार के सारे सुख छोड़ सकते थे, हर त्याग करने को तत्पर थे। परमात्मा पर यह अटूट विश्वास ही उनके अंदर सदा सहज, संतोष व आनन्द की अवस्था बनाये रखने वाला था। गुरु साहिब का स्वयं का विश्वास था और यह विश्वास उन्होंने खालसा में भी भरा कि बड़ी से बड़ी विपत्ति में रक्षक केवल परमात्मा ही होता है। *''सवा लाख से एक लड़ाऊं''* के विचार की पृष्ठभूमि में भी यही अवधारणा काम कर रही थी। इसे सिक्ख की वीरता के स्थान पर उसके विश्वास से जोड़ कर देखने पर बात सरलता से समझ आ जाती है :

अगर बर यक आयद दहो दह हज़ार॥
निगाहबान ऊ रा शवद किरदगार॥१०४॥
(ज़फ़रनामा)

गुरु साहिब ने कहा कि यदि एक अकेले व्यक्ति पर असंख्य वैरी हमला कर दें तो उसका रक्षक स्वयं परमात्मा होता है। तात्पर्य यह कि परमात्मा पर आस्था के बल पर अकेला मनुष्य असंख्य शत्रुओं को भी परास्त कर विजय प्राप्त करता है।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी पर युद्ध थोपे गये, इसलिये उन्हें रणभूमि में उतर वीरता प्रकट करनी पड़ी, क्योंकि वे उस परमात्मा के दास थे, जो श्री गुरु नानक साहिब के शब्दों में भय से रहित था और उसे जपने वाला भी निर्भय हो जाता है। गुरु साहिब की वीरता उनकी भक्ति का एक आयाम थी। उन्होंने सच्चा आध्यात्मिक राज स्थापित किया, जिसका संविधान परमात्मा की स्तुति था और जिसकी शक्ति परमात्मा की कृपा से प्राप्त आत्म-बल था, जो खंडे-बाटे के अमृत के माध्यम से हर सिक्ख में अवस्थित हुआ। उनके द्वारा स्थापित राज में सहज, संयम और संतोष की मुद्रायें चलीं और गुरबाणी को सिंहासन प्राप्त हुआ। वह मन के अंदर चलने वाला राज है जो आज भी कायम है और सदा कायम रहने वाला है। खालसा को गुरु साहिब ने सार्वभौमिक सिद्धांतों का ऐसा आधार प्रदान किया, जिसमें समस्त मानवता का हित निहित है।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी : महान् एवं आदर्श विभूति

*-डॉ. राजेंद्र सिंघ 'साहिल'**

दशमेश पिता साहिब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी महान् आध्यात्मिक-सामाजिक नेता, उत्कृष्ट चिंतक एवं दार्शनिक, उच्च कोटि के कलाविद और विद्वान्, अनपम बाणी-उच्चारक एवं भाषाविद् तथा आदर्श सेनानायक रहे हैं। गुरु जी का जीवन-काल इतना सम्पूर्ण एवं उदात्त है कि जिससे प्रेरणा प्राप्त कर मनुष्य, जीवन के उच्चतम आदर्शों को प्राप्त करने के साथ-साथ अपनी सामान्य समस्याओं से निपटने के लिए भी मार्गदर्शन प्राप्त कर सकता है। वास्तव में दशमेश पिता एक संपूर्ण एवं आदर्श व्यक्तित्व हैं ।

संत-सिपाही : दशमेश पिता संत भी थे और सिपाही भी। आपने गरीबों और मज़लूमों की रक्षा एवं जुल्म का विरोध करने के लिए शस्त्र धारण किये। युद्ध करते समय भी गुरु जी का हृदय उच्च मानवीय गुणों से ओत-प्रोत रहता था। औरंगजेब के सिपहसालार सैद खान से युद्ध करते समय गुरु जी ने उस पर वार किया तो वह घायल होकर गिर पड़ा। ऐसी अवस्था में भी दशमेश पिता ने न सिर्फ अपनी ढाल से उस पर छाया की, बल्कि उसकी मरहम-पट्टी का भी प्रबंध किया। यह भी प्रसिद्ध है कि गुरु जी के तीरों में सोना लगा होता था, ताकि आपके हाथों मरने वाले को अंतिम संस्कार का सामान मिल सके और यदि कोई जख्मी हो जाये तो उसे इलाज का खर्च मिल सके।

जब गुरु जी के पास भाई घन्हईआ जी की शिकायत पहुंची कि ये शत्रु पक्ष के घायलों को भी पानी पिलाते हैं तो आपने भाई घन्हईआ जी की प्रशंसा की और दवा-दारू अपने पास से देकर आज्ञा दी कि अब घायलों की मरहम-पट्टी भी किया करो।

महान योद्धा, संगठनकर्ता और सेनानायक : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी उच्च कोटि के योद्धा तो थे ही, साथ ही महान् संगठनकर्ता एवं सेनापति भी थे। आपने अन्याय से पीड़ित जनता को एकत्र कर खालसा पंथ का सृजन किया और ऐसी अदम्य शक्तिशाली सेना तैयार की जिसने अपने समय की सबसे बड़ी सैन्य शक्तियों से लोहा लिया और उन्हें परास्त किया।

गुरु जी का सेनानायकत्व भी विलक्षण था। आपने मुट्ठी भर सिक्खों को लेकर बड़ी-बड़ी फौज़ों से युद्ध किया और विजयी रहे।

**१/३३८, स्वप्नलोक, दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब-१४११०१, फोन : ९४१७२-७६२७१*

चमकौर साहिब के युद्ध को कैसे भूला जा सकता है, जहां मात्र चालीस सिक्खों के साथ लाखों की संख्या वाली सेना को नाकों चने चबवा दिये। विभिन्न किलों की स्थापना गुरु साहिब की रणनीतिक सूझ की परिचायक है।

सामाजिक एवं राजनीतिक चिंतक : दशमेश पिता का समस्त संघर्ष शोषित-पीड़ित मानवता की रक्षा के लिए था। आपने खालसा पंथ की सृजना कर, अमृत छका कर दीन-हीन मनुष्यों में महान् शक्ति भर दी। *''चिड़ीयों से ते मैं बाज तुड़ाऊं''* और *''सवा लाख से एक लड़ाऊं''* का उद्घोष कर गुरु जी ने इनमें वह शक्ति संचारित कर दी कि ये अपने सम्मान की रक्षा के लिए बड़ी से बड़ी शक्ति से भी भिड़ने में समर्थ हो गए। गुरु जी द्वारा सृजित खालसा पंथ जात-पांत, ऊंच-नीच आदि समस्त भेदभाव से मुक्त था और सभी प्राणियों को एक ही ईश्वर की संतान मानने वाला था। गुरु जी ने शक्तिहीन जनता को राजनीतिक शक्ति हासिल करने योग्य बनाया। दशमेश पिता का यह प्रयास कालान्तर में सिक्ख-राज्य की स्थापना के साथ सफलतापूर्वक पूर्ण हो गया था।

गुरु जी का संदेश स्पष्ट था कि सभी प्राणी समान हैं और सामाजिक-राजनीतिक व्यवस्था में उनकी भागीदारी का अधिकार भी समान है।

आध्यात्मिक नेतृत्व : गुरु जी ने शोषित-पीड़ित मानवता को सांसारिक शक्ति प्राप्त करने के योग्य ही नहीं बनाया, बल्कि उसे आध्यात्मिक क्षेत्र में भी उच्च कोटि का नेतृत्व प्रदान किया। प्रथम पातशाह साहिब श्री गुरु नानक देव जी द्वारा स्थापित एवं परवर्ती गुरु साहिबान द्वारा पुष्ट आध्यात्मिक मार्ग को सिक्खों का आदर्श बनाने में दशमेश पिता ने कोई कमी शेष न रखी। आपने सिक्खों को पांच ककार प्रदान कर उच्च आदर्श जीवन जीने का सिद्धांत प्रदान किया।

केश— उच्च चिंतन, कृपाण— शक्ति, कछहिरा— आदर्श चरित्र, कड़ा— संयम और कंघा— स्वच्छता या निर्मलता का प्रतीक है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब को गुरुआई सौंपना भी दशमेश पिता का एक अद्भुत निर्णय था। आपने श्री गुरु ग्रंथ साहिब को गुरु रूप में स्थापित किया।

सरबंसदानी (सर्ववंशदानी) : विश्व का इतिहास आत्म-बलिदानियों के अनगिनत उदाहरणों से भरा पड़ा है, परंतु सर्ववंश दान की एकमात्र मिसाल मिलती है और वो मिसाल है— दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का सर्ववंश-दान। दशमेश पिता के परदादा पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने शहादत देकर शहीदी-परम्परा का आरंभ किया। फिर दशम गुरु के पिता नवम् पातशाह

श्री गुरु तेग बहादर जी ने चांदनी चौक में शहादत दी। दशम पातशाह ने अपने चारों साहिबजादे भी मानवता की रक्षा के लिए शहीद करवा दिये। माता गुजरी जी भी इस संघर्ष में अपनी शहादत दे गईं।

चमकौर साहिब के युद्ध के बाद जब दशमेश पिता को चारों साहिबजादों की शहादत के विषय में बताया गया तो महान गुरु जी ने कहा— ''चार मुए तो किआ हुआ, जीवत कई हज़ार।'' अर्थात् मेरे चार पुत्र शहीद हो गये तो क्या हुआ, सिक्खों के रूप में मेरे हज़ारों पुत्र अभी जीवित हैं।

महान बाणीकार एवं भाषाविद् : दशमेश पिता का महान बाणीकार एवं विद्वान होना आपके व्यक्तित्व के भावुक और संवेदनशील पक्ष को उजागर करता है। अकाल उसतत, जापु साहिब, ज़फरनामा आदि उत्कृष्ट बाणियों के उच्चारणकर्त्ता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी बहुभाषी विद्वान भी थे। आप संस्कृत, अरबी, फारसी, ब्रज, पंजाबी आदि अनेक भाषाओं के ज्ञाता थे। यही नहीं, गुरु जी ने भाई मनी सिंघ जी के माध्यम से पूर्ण श्री गुरु ग्रंथ साहिब का कार्य सम्पन्न किया था।

सहृदय आश्रय-दाता : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी कलम के धनी कवियों और विद्वानों के सहृदय आश्रय-दाता भी थे। सिक्ख इतिहास परंपरा के अनुसार गुरु जी के पाउंटा साहिब, श्री अनंदपुर साहिब एवं लखी जंगल के विद्या दरबारों में ५२ कवि एवं ३४ अन्य विद्वान थे। ये सभी कवि-विद्वान गुरु साहिब की साहित्य को प्रोत्साहित करने की नीति से आकर्षित होकर यहां आये थे।

ये कवि-विद्वान भिन्न-भिन्न क्षेत्रों से संबंध रखते थे। कवि भाई नंद लाल जी गजनी से, कवि सुदामा और कवि कुवरेश बुंदेलखंड से, कवि ईश्वरदास आगरा से, कवि सुखदेव राय बरेली से, कवि गोपाल गोकुल से, कवि कांशीराम बनारस से और कवि वृंद मेड़ता से दशमेश-दरबार में प्रवाहित ज्ञान-सरिता में स्नात होने के लिए आये थे।

धर्म, जाति, वर्ग आदि की दृष्टि से भी इन कवि-विद्वानों की पृष्ठभूमि भिन्न-भिन्न थी। भाई नंद लाल जी, कवि अमृत राय, कवि टहिकन दास, कवि नंद राम, कवि सुखदेव, कवि कांशी राम, कवि वृंद, कवि गिरधर लाल, कवि तनसुख जैसे विद्वान, विद्वता एवं सम्पदा-सम्पन्न पृष्ठभूमि से आये थे। कवि आलम और कवि हुसैन अली मुस्लिम वर्ग से थे। मीर छबीला और कवि मीर मुशकी ढाडी (वार-गायक) थे। कवि ननूआ तथा कवि मानदास वैरागी थे और कवि रामदास, कवि मदन सिंघ एवं कवि धंना सिंघ अत्यंत साधारण परिवार से आये थे। कवि हीर तो गुरु-दरबार में आने से पहले बेहद दरिद्र थे।

वास्तव में दशमेश पिता के दरबार में बिना किसी भेदभाव के मात्र कला, विद्वता और प्रतिभा को ही सम्मान दिया जाता था। भाषा की दृष्टि से भी दशमेश-दरबार में कोई संकीर्णता नहीं थी। स्वयं बहुभाषाविद गुरु जी के दरबार में कई भाषाओं के विद्वान एवं कवि थे। भाई नंद लाल जी और कवि आसा सिंघ मुतसद्दी अरबी-फारसी के, कवि ब्रज लाल, कवि देवी दास, कवि अमृत राय, कवि ईश्वर दास, कवि मंगल आदि संस्कृत एवं ब्रज भाषा के ज्ञाता थे।

गुरु-दरबार के समस्त कवि-विद्वान अपने-अपने क्षेत्र के गंभीर अध्येता, चिंतक और सृजक थे, इसीलिए धर्म, संस्कृति, इतिहास, समाज, राजनीति, काव्य आदि विषयों पर निरंतर अध्ययन-मनन-सृजन चलता रहता था। गुरु जी का मानना था कि समाज की उन्नति मनुष्य के मानसिक परिष्कार से ही हो सकती है और यह सत्-साहित्य के माध्यम से ही संभव है। गुरु जी ने नवीन काव्य-सृजन को भी प्रोत्साहन दिया और साथ ही प्राचीन सांस्कृतिक ग्रंथों का जन-भाषा में अनुवाद भी करवाया।

दुर्भाग्य से यह अमूल्य साहित्य १७०४ ई. में श्री अनंदपुर साहिब छोड़ते समय बड़ी मात्रा में सरसा नदी में बहकर नष्ट हो गया था।

इस प्रकार दशमेश पिता का विद्या-दरबार मानवीय समता एवं सर्वधर्म समभाव जैसे मूल्यों पर आधारित संस्था थी। यहां सभी को बिना किसी भेदभाव के समान अवसर उपलब्ध थे।

वैश्विक नेतृत्व : साहिब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का सारा संघर्ष पीड़ित-शोषित मानवता के लिए था। गुरु जी के यहां धर्म, जाति, क्षेत्र, रंग, नस्ल आदि को लेकर कहीं कोई भेदभाव नहीं दिखता। ''. . . मानस की जात सबै एकै पहिचानबो'' के उद्घोषक दशमेश पिता संपूर्ण वैश्विक अगुआ हैं।

सामाजिक-राजनीतिक व्यवस्था में भागीदारी, सत्य, मानवता, समानता, सर्वधर्म समभाव, स्वाभिमान की रक्षा आदि ऐसे जीवन-मूल्य हैं, जो श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के जीवन से प्राप्त होते हैं। इनके अभाव में आज भी मानव, समाज और राष्ट्र की उन्नति असंभव है।

मानवता के संरक्षक : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी

*– प्रिं. डॉ. इंदर सिंघ पटियाला**

दशम पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी महाराज बहुपक्षीय शख्सियत के मालिक थे। उनके जैसा बहुमुखी प्रतिभा से सुसज्जित व्यक्तित्व भारतीय इतिहास में तो क्या, समूचे विश्व-इतिहास में भी दृष्टिगोचर नहीं होता है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी संत-सिपाही, समाज-सुधारक, महान क्रांतिकारी, राष्ट्र-नायक, साहित्य-प्रेमी, अनेक भाषाओं के ज्ञाता, उच्च कोटि के विद्वान, कवियों-विद्वानों के कद्रदान, महान चिंतक, दार्शनिक, बादशाह दरवेश, 'आपे गुर चेला' (गुरु भी और शिष्य भी), लोकतांत्रिक प्रणाली के वास्तविक जन्म-दाता, शहीद पिता के शहीद पुत्र, शहीद पुत्रों के साहसी पिता, खालसा पंथ के संस्थापक, सरबंस बलिदानी, आदर्श मानव, मानवता के रक्षक— सब कुछ थे, लेकिन मेरी दृष्टि में सबसे पहले वे संत-सिपाही और मानवता के संरक्षक हैं। धर्म और मानवता की रक्षा हेतु उन्होंने अपने पिता धर्म की चादर श्री गुरु तेग बहादर साहिब, पूजनीय मां माता गुजरी जी, चारों सुपुत्रों को कुर्बान कर दिया। अंत में अपने प्राणों की आहुति भी जन-कल्याण के लिए दे दी। धर्म और मानवता का ऐसा बेजोड़ उपासक समूचे विश्व-इतिहास में न तो आज तक पैदा हुआ है और न ही कभी पैदा होगा। धर्म और मानव-मात्र की रक्षा के लिए ही अकाल पुरख ने इन्हें इस पृथ्वी पर भेजा था :

हम इह काज जगत मो आए ॥
धरम हेत गुरदेवि पठाए ॥
जहां तहां तुम धरम बिथारो ॥
दुसट दोखीअनि पकरि पछारो ॥

(बचित्र नाटक)

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के समय जात-पांत और धार्मिक भेदभाव के कारण भारतीय राष्ट्र और समाज विखंडित हो चुका था। जाति-प्रथा ने भयानक रूप धारण कर लिया था। फलस्वरूप धर्म और जात- पांत के भेदभाव को जड़ से समाप्त करने के लिए गुरु जी ने विलक्षण और नये धार्मिक संगठन को स्थापित करने का दृढ़ निश्चय किया :

याही काज धरा हम जनमं ॥

** महाराज ब्रह्म सागर ब्रह्मानन्द भूरी वाले कालेज, टिब्बा नंगल (रोपड़)*

समझ लेहु साधू सभ मनमं ॥
धरम चलावन संत उबारन ॥
दुसट सभन को मूल उपारनि ॥

(बचित्र नाटक)

गुरुदेव मानवतावादी सिद्धांतों के पक्के समर्थक थे। उन्होंने कभी भी जात-पांत, रंग या लिंग के आधार पर मानव-मानव में भेद स्वीकार नहीं किया। उन्होंने सभी लोगों को एकता के सूत्र में पिरोने का अद्वितीय और महान कार्य किया। १७५६ बिक्रमी की वैसाखी वाले दिन खालसा पंथ की सृजना करते समय उन्होंने पाँच प्यारों में भिन्न-भिन्न जाति-वर्ग के लोगों को शामिल किया। भाई दया सिंघ लाहौर के क्षत्रिय, भाई धरम सिंघ दिल्ली के जट्ट, भाई मोहकम सिंघ द्वारिकापुरी के धोबी, भाई साहिब सिंघ दक्षिणी भारत के बिदर के नाई और भाई हिंमत सिंघ जगन्नाथपुरी के झीवर थे। ये पांचों सिंघ जहाँ समाज की तथा कथित भिन्न-भिन्न जातियों से संबंधित थे, वहीं समूचे देश के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व भी करते थे। पाँच प्यारों को एक ही बाटे से अमृत छका कर ऊंच-नीच और क्षेत्रादि का भेदभाव मिटा कर प्रतायड़ित दबे-कुचले लोगों में ऐसी शक्ति का संचार किया कि वे गीदड़ से शेर बन कर सवा-सवा लाख अत्याचारियों के साथ टक्कर लेने के योग्य हो गए। अमृत छकाने का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति को निर्भय और निडर बनाने का था, ताकि वह भय-मुक्त होकर ग़ुलामी की जंजीरें तोड़ने के लिए संघर्ष करने हेतु तैयार हो सके। किसी से डरना भी पाप है और किसी को डराना भी पाप है। दशम पिता के सम्मुख नवम पातशाह का यह संदेश था— ''भै काहू कंउ देत नहि नहि भै मानत आन॥'' कलगीधर पिता ने सुदृढ़ लोकतांत्रिक राष्ट्र की स्थापना की। खालसा पंथ बना कर उन्होंने शक्तिशाली, अत्याचारी और अन्यायी मुग़ल शासन की जड़ें हिला कर रख दीं। पंजाब के धार्मिक और भक्ति-भावना रखने वाले विशाल जनसमूह को गुरु जी ने शूरवीर दल में बदल दिया। कायर और बलहीन लोगों में स्वाभिमान जागृत कर उन्हें महान राष्ट्रनायक गुरुदेव ने एहसास करवाया कि वे शक्ति-विहीन नहीं हैं, वे तो शेर हैं। गुरु साहिब ने उन्हें एहसास करवाया कि अपने अंदर की शक्ति को पहचानने की ज़रूरत है। समानता और अधिकार अगर मिलते नहीं हैं, तो संघर्ष करके प्राप्त किये जाते हैं। बलवान और हिम्मतवाला इंसान ही अपने अधिकारों को प्राप्त कर पाता है :

कोऊ किसी को राज न दैहै ॥
जो लैहै निज बल सिउ लैहै ॥

गुरु जी ने सब सिक्खों को अपने नाम के साथ 'सिंघ' विशेषण जोड़ने का आदेश दिया। विश्व-इतिहास के लांसानी योद्धा होते हुए भी गुरु जी ने अपने नम्र स्वभाव के अनुरूप लोकतांत्रिक प्रणाली के अनुसार जन-शक्ति को ही अपनी शक्ति स्वीकार किया :

जुद्ध जिते इन ही के प्रसाद
इनही के प्रसाद सु दान करे ॥
अघ ओघ टरे इनही के प्रसाद
इनही की क्रिपा सब धाम भरे ॥
इनही के प्रसाद सु बिदया लई
इनही की क्रिपा सब सत्र मरे ॥
इनही की क्रिपा के सजे हमहै
नहीं मो से गरीब करोर परे ॥ (पंथ प्रकाश)

जैसे कि पहले लिखा जा चुका है कि पाँच प्यारों को एक ही बाटे से अमृत छका कर गुरु जी ने उनके बीच से जात-पांत समाप्त कर दी। पाँच प्यारे अब गुरु जी के खालसा बन गए। बाद में पाँच प्यारों के हाथों गुरु जी ने स्वयं अमृत-पान किया। इस प्रकार गुरु जी और पाँच प्यारे एक दूसरे में अभेद हो गए। गुरु जी पाँच प्यारों के गुरु भी थे और उनके चेले भी :

वाह वाह गोबिंद सिंघ आपे गुरु चेला ॥
(वार ४१:१)

कलगीधर पातशाह के चारों सुपुत्र धर्म की रक्षा हेतु शहीद हो गए। दोनों बड़े साहिबज़ादे— बाबा अजीत सिंघ जी और बाबा जुझार सिंघ जी चमकौर के युद्ध में शहीद हो गए। दोनों छोटे साहिबज़ादे— बाबा फतहि सिंघ जी और बाबा जोरावर सिंघ जी सरहिंद में दीवार में ज़िंदा चिन कर ज़िबह करके शहीद कर दिए गए। ऐसे लासानी बलिदानी गुरु जी को यश-प्राप्ति का ज़रा भी मोह नहीं था। अनंत शक्तियों के मालिक होते हुए भी गुरु जी ने स्वयं को प्रभु का दास ही स्वीकार किया और उन्हें परमेश्वर कहने से अपने सिक्खों को वर्जित किया है। इससे अधिक विनम्रता और क्या हो सकती है ?

जे हम को परमेसुर उचरि है ॥
ते सभ नरकि कुंड महि परिहै ॥
मो को दासु तवन का जानो ॥
या मै भेदु न रंच पछानो ॥
मै हो परम पुरख को दासा ॥
देखनि आयो जगत तमासा ॥ (बचित्र नाटक)

संत-सिपाही श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का संघर्ष अन्याय, अत्याचार और अमानवीय कार्मों के ख़िलाफ़ था। ज़ालिम कोई भी (हिंदू या मुसलमान) हो, गुरु जी ने उसे नैतिकता का पाठ पढ़ाया। कुछ लोग गुरु जी को मुसलमानों के विरोधी कहने की बज्जर गलती कर बैठते हैं। वे भूल जाते हैं कि नबी

खान, गनी खान आदि अनेक मुसलमान गुरु जी के सच्चे श्रद्धालु थे। गुरु जी तो हिन्दू-मुसलमान में कोई फर्क नहीं समझते थे, क्योंकि उनके अनुसार सब मानव एक ही परमात्मा की संतान हैं। वे तो मनुष्य-मात्र को प्यार करते थे, परन्तु इसके लिए कसौटी यह थी कि वह मनुष्य सच्चा व विशुद्ध हो। गुरुदेव विश्व की समूची मानवता में सर्वधर्म की भावना देखने के इच्छुक थे :

हिंदू तुरक कोऊ राफिज़ी इमाम साफी,
मानस की जाति सबै एकै पहिचानबो ॥
करता करीम सोई राजिक रहीम ओई,
दूसरो न भेद कोई भूलि भ्रम मानबो ॥
एक ही की सेव सभ ही को गुरदेव एक,
एक ही सरूप सबै एकै जोति जानबो ॥

(अकाल उसतति)

यह अटल सच्चाई है कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के युद्ध किसी धर्म या जाति के ख़िलाफ़ न होकर धर्म-रक्षा हेतु धर्म-युद्ध थे :

अवर बासना नाहि प्रभ, धरम जुद्ध के चाइ ॥

युद्ध किसी सत्ता-भोग के लिए नहीं, बल्कि केवल शुभ कर्मों के लिए ही लड़े गए, इसीलिए गुरु साहिब अकाल पुरख के समक्ष विनती करते हुए फरमान करते हैं :

देह सिवा बरु मोहि इहै,
सुभ करमन ते कबहूं न टरों ॥
न डरो अरि सो जब जाइ लरो,
निसचै करि अपुनी जीत करो ॥
अरु सिखहों आपने ही मन को,
इह लालच हउ गुन तउ उचरों ॥
जब आव की अउध निदान बनै,
अति ही रन मै तब जूझ मरो ॥ (चंडी चरित्र)

गुरु जी के समय जगत-जननी नारी की दशा अत्यंत दयनीय थी। उसे समाज में कोई सम्मानजनक रुतबा तो क्या प्राप्त होना था, वह तो पुरुष के पैर की जूती समझी जाती थी। वह बलहीन समझी जाती थी। मानवीय समानता लाने के मंतव्य से गुरु साहिब ने स्त्री जाति में हिम्मत और वीरता का संचार किया। उसे अपने नाम के साथ 'कौर' का विशेषण लगाने का हुक्म दिया, जिससे वह अपने माँ-बाप की लाडली संतान समझी जाने लगी। 'कौर' शब्द 'कुंवर' का पंजाबी रूप है। 'कुंवर' बादशाह के लाडले पुत्र को कहा जाता है। इस प्रकार गुरु जी ने औरत को उसके पिता का कुंवर या राजकुंवर दिखाया है। गुरु साहिब ने नारी को एहसास करवा दिया कि वह अब बलहीन नहीं बल्कि बलवान है। फलस्वरूप माता भागो जी जैसी सिक्ख महिलाओं ने अत्याचार के विनाश के लिए हाथ में तेग उठा ली थी। दशम पातशाह

द्वारा माता साहिब कौर जी को 'ख़ालसे की माता' बना कर अमर करना, खालसे की सृजना के समय और पाँच प्यारों को अमृत छकाते समय माता सुंदरी जी से बाटे में बतासे डलवाने की घटनाएँ नारी जाति को महत्व देने वाली हैं। गुरुदेव इंसानियत की सजीव मूर्ति थे। एक बार श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के दर्शन को आ रही शस्त्र-विहीन सिक्ख संगत से होशियारपुर के रंघड़ों (राजपूत मुसलमान) ने दसवंध और अन्य कीमती भेंट छीन ली तो पता चलने पर गुरु जी ने रंघड़ों को सुधारने के लिए शस्त्रधारी सिंघ भेजे। रंघड़ों को सुधारने गए कुछ सिक्ख उनकी एक लड़की भी पकड़ लाए। गुरु साहिब ने सिक्खों को हुक्म दिया कि इस लड़की को सम्मान सहित वापिस छोड़ आओ। सिक्खों ने अर्ज़ किया कि चाणक्य-नीति के अनुसार दुश्मन से हर तरह से बदला लेने की आज्ञा है, लेकिन मानवता के संरक्षक गुरु जी ने उन्हें इस तरह की सोच त्याग कर पर-नारी का सम्मान करने का उपदेश दिया। गुरुदेव ने अपने सिक्खों को नारी-सम्मान की कितनी सुंदर और नेक शिक्षा दी है!

निज नारी के साथ नेह तुम नित्ति बढैयहु॥
पर नारी की सेज भूल सुपने हूं न जैयहु॥

गुरु जी अपनी पत्नी के अलावा परायी स्त्री को उम्र के अनुसार माँ, बहन और बेटी समझने का उपदेश देते हैं। यह सतिगुरु के उपदेश का ही फल है कि सिक्ख-जगत में परायी बेटी-बहन और साधारण स्त्री के लिए भी 'बीबी' शब्द का प्रयोग किया जाता है। गुरु जी के हृदय में मानव-मात्र के लिए प्यार कूट-कूट कर भरा हुआ था। मानवता संरक्षक के वे ऐसे मुजस्समा थे कि जंग के मैदान में भी वे हिंदू-मुसलमान, मित्र-शत्रु में कोई अंतर नहीं समझते थे। उनके निम्नलिखित उपदेश को ध्यान में रख कर ही भाई घनईआ जी युद्ध के मैदान में हिंदू-मुसलमान, मित्र-दुश्मन सबको बिना किसी भेदभाव के जल पिलाने की सेवा और ज़ख्मों पर मरहम-पट्टी करते थे:

साचु कहों सुन लेहु सभै
जिन प्रेम कीओ तिन ही प्रभ पाइए॥
(त्व प्रसादि सवय्ये)

आओ! मानवता और परोपकारता के महान संरक्षक श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी महाराज के सिद्धांतों पर चलने का प्रण करते हुए उन्हें सच्ची श्रद्धाँजलि भेंट करें!

मानवीय एकता एवं अखण्डता में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का विलक्षण योगदान

-डॉ. मनजीत कौर*

हिंदू तुरक कोऊ राफजी इमाम साफी
मानस की जात सबै एकै पहिचानबो ॥...१५ ॥८५ ॥
(अकाल उसतत)

भारत सदियों से एक ऐसा देश रहा है जहां विभिन्न क्षेत्र, धर्म, संस्कृति, परंपरा, जाति और पंथ के लोग एक साथ निवास करते हैं। विभिन्न क्षेत्रों में विविध प्रकार की भिन्नताओं के बावजूद भी भारत देश के लोगों का एक साथ रहना अथवा जीवन-यापन करना मनुष्य जाति के सर्वोच्च भावनात्मक जुड़ाव का परिणाम है। मानवीय एकीकरण किसी भी देश की एकता, अखण्डता को बनाये रखने के साथ-साथ मजबूत और समृद्ध राष्ट्र-निर्माण करने हेतु उस राष्ट्र के महापुरुषों तथा मानवता द्वारा अनुभव की गई एकजुटता एवं एकता है।

मानव समाज की एकता एवं अखण्डता को स्थापित करने तथा स्थापित एकता के मूल सिद्धांतों को अपनाने व मानवीय एकता की मशाल प्रज्वलित रखने में अपना सर्वस्व न्योछावर करने वाले श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने जुल्म एवं अत्याचार के तले पिस रही भारतीय जनता में पैदा हुई हीन भावना तथा निर्बलता को दूर किया; गुलामी की जंजीरों को तोड़ फेंकने, मातृ-भूमि के लिए मर-मिटने के भाव की ज्योति जलाए रखने हेतु हिम्मत एवं अदम्य साहस का संचार किया। उनके आगमन के समय देश विषम परिस्थितियों से जूझ रहा था। जहां एक ओर सत्ता की तलवार के बल पर निर्दोष जनता पर जुल्म ढाये जा रहे थे तथा जबरन धर्म-परिवर्तन करवाया जा रहा था, वहीं दूसरी ओर धर्म की आड़ में अपनों द्वारा भी जनमानस को गुमराह कर खोखले आडम्बरों एवं अंधविश्वासों में फंसाकर भोली-भाली जनता को लूटा जा रहा था। जात-पांत, ऊँच-नीच के भेदभाव की भावना देश को दीमक की तरह खा रही थी।

भारती वरण वंड प्रणाली ने मानव जीवन-मूल्यों को गहरी चोट पहुंची। जिसके परिणामस्वरूप भारत लंबे समय तक एकता से वंचित रहा। ऐसे समय में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने सम्पूर्ण देश को एकता के सूत्र में पिरोने का पुनीत कार्य किया। उन्होंने समूची मानवता को संदेश दिया कि ईश्वर की

*२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन: ९९२९७-६२५२३

उपासना के साधन भिन्न-भिन्न हो सकते हैं, रास्ते अलग-अलग हो सकते हैं, लेकिन साध्य सभी का एक है, इसलिए साध्य की साधना के लिए साधनों के अंतर और विविधता को समरूपता प्रदान कर, भारतीय समाज को विघटन से बचाकर सशक्त बनाया जा सकता है।

गुरु जी के चिन्तनानुसार सभी इंसान एक जैसे हैं। सबके शरीरों की संरचना एक-सी है। पानी, मिट्टी, अग्नि, हवा, आकाश— पंच तत्वों से निर्मित शरीर की शारीरिक संरचना में प्रकृति ने तनिक भी भेद नहीं किया :

देहरा मसीत सोई पूजा औ निवाज ओई
मानस सबै एक पै अनेक को भ्रमाउ है ॥
देवता अदेव जच्छ गंध्रब तुरक हिंदू
निआरे निआरे देसन के भेस को प्रभाउ है ॥
एकै नैन एकै कान एकै देह एकै बान
खाक बाद आतस औ आब को रलाउ है ॥
अलह अभेख सोई पुरान औ कुरान ओई
एक ही सरूप सभै
एक ही बनाउ है ॥१६ ॥८६ ॥ (अकाल उसतत)

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का आविर्भाव औरंगजेब के शासन-काल में हुआ था। इतिहास गवाह हैं कि औरंगजेब अपनी कट्टरता और अत्याचार के लिए प्रसिद्ध था। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के अदम्य साहस ने औरंगजेब के प्रयत्नों की धार को कुंद कर दिया और उसे अपने उद्देश्य में सफल नहीं होने दिया। नौ वर्ष की अवस्था में कश्मीरी पण्डितों की हृदय-विदारक गाथा सुनकर पिता श्री गुरु तेग बहादर साहिब को धर्म की अजादी की रक्षार्थ आपने सहमति देकर अपने अदम्य साहस का परिचय दिया। उन्होंने गंभीरता से अनुभव किया कि देश के पतन का मुख्य कारण छुआ-छूत तथा जातिगत भेदभाव है और इस भिन्नता ने देशवासियों को कदाचित संगठित नहीं होने दिया।

वस्तुत: वर्ण-विभाजन ही देश-रक्षा में सबसे बड़ी बाधा और चुनौती थी। देश की रक्षार्थ केवल क्षत्रिय ही जूझते थे। इनके अतिरिक्त ब्राह्मण, वैश्य तथा शूद्र जातियों ने न तो कभी शस्त्र उठाये और न ही देश की रक्षा हेतु कोई योगदान दिया। यह तो गुरु दशमेश पिता की दूरदर्शिता एवं विवेकशीलता का ही परिणाम था, जिन्होंने सर्वप्रथम यह अनुभव किया कि जब तक सम्पूर्ण राष्ट्र एवं जातियां स्वयं को संगठित कर इस अन्याय व जुल्म के विरुद्ध शस्त्र उठाकर खड़ी नहीं होंगी तब तक न तो जुल्म की आंधी रुकेगी और न ही गुलामी की जंजीरें कट सकेंगी।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने देश को एक सूत्र में पिरोने एवं देशवासियों की सोई हुई आत्मा को जगाने व देश में सैनिक-शक्ति का पुनर्जन्म करने के लिए धार्मिक, सामाजिक एवं

राजनीतिक क्षेत्र में कार्य आरम्भ किया। एक ईश्वर की उपासना पर बल देते हुए समस्त वहमों, भ्रमों तथा कर्मकाण्डों से छुटकारा दिलवाया। तथाकथित पिछड़ी एवं कमजोर जाति के लोगों का उत्थान किया और उन्हें तथाकथित स्वर्ण (उच्च) जाति के लोगों के बराबर सम्मान देते हुए— ''मानस की जात सबै एकै पहिचानबो॥'' का लक्ष्य निर्धारित किया। इस उद्देश्य की सफलता हेतु १७५६ बिक्रमी में वैसाखी वाले दिन खालसा पंथ की सृजना की। खालसा पंथ की सृजना कर जहां गुरु जी ने जाति-भिन्नता मिटाई, वहीं खालसा के रूप में देश को सैनिक उत्साह वाले परवाने भी दिये। पांच प्यारों द्वारा किये फैसले को मानने का आदेश देकर देश में जुलम को मिटाने वाले गणतंत्र की बुनियाद रखी।

कालान्तर में दुनिया ने देखा कि वही कमजोर और नीच समझी जाने वाली जाति के लोगों ने हाथों में शस्त्र लेकर इतनी वीरतापूर्वक युद्ध लड़े कि देखने वाले दंग रह गए। गुरु जी ने सदियों से अत्याचार से दबी जनता में पुरुषार्थ की ऐसी ज्योति जगाई कि भारतीयों की रगों में जमा हुआ खून पिघल गया तथा वीरता की ज्वाला फूट पड़ी। इस प्रकार फौलादी इरादे वाले इंसान देश-धर्म की रक्षार्थ योद्धा बने, जिनकी सुप्त शक्ति को जगाने हेतु श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का उद्घोष था :

चिड़ियों से मैं बाज तुडाऊं।
गिदड़ों से मैं शेर बनाऊं।
सवा लाख से एक लड़ाऊं।
तबै गोबिंद सिंघ नाम कहाऊं॥

समस्त धर्म-युद्ध लड़ने हेतु, निश्चित रूप से विजित रहने हेतु परम पिता अकाल पुरख परमात्मा से यही आशीर्वाद मांगा :

देह सिवा बर मोहि इहै
सुभ करमन ते कबहूं न टरों॥
न डरों अरि सो जब जाइ लरों निसचै कर अपनी जीत करों॥...२३१॥ (चंडी चरित्र)

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के जीवन में मानवीय एकता एवं अखण्डता का एक विलक्षण उदाहरण यहां उल्लेखनीय है— श्री अनंदपुर साहिब के युद्ध में कुछ सिक्ख सिपाहियों ने गुरु जी के पास जाकर शिकायत की कि भाई घन्हईआ जी जख्मी हुए दुश्मनों को भी पानी पिला कर उनमें ऊर्जा का संचार कर रहे हैं। तब गुरु जी ने भाई घन्हईआ जी को बुलाकर पूछा, ''क्या यह सच है कि तुम घायल दुश्मनों को भी पानी पिलाते हो?'' भाई घन्हईआ जी ने हाथ जोड़ कर बड़ी विनम्रतापूर्वक कहा, ''गुरुदेव! मुझे तो आपके अतिरिक्त कोई नज़र ही नहीं आता।'' गुरु जी ने भाई घन्हईआ जी को मरहम की डिब्बी देते हुए कहा कि ''जरूरत पड़े तो पानी पिलाने के साथ-साथ घायल व्यक्तियों के

जख्मों पर मरहम भी लगा देना।''

नि:संदेह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की बेमिसाल शख्सियत को शब्दों द्वारा बयान नहीं किया जा सकता, क्योंकि सारी दुनिया में उनका कोई सानी नहीं है। अंत में 'साहिबे-कमाल गुरु गोबिंद सिंघ' नामक पुस्तक के पृष्ठ ६४ पर अंकित लाला दौलत राय के विचार यहां उल्लेखनीय हैं, जो लेखक की गुरु साहिब के प्रति अपार श्रद्धा को स्पष्ट परिलक्षित करते हैं। उनके चिन्तनानुसार :—

''इस हस्ती ने . . . धर्म की नाव को तूफान से निकाला ही नहीं, अपितु किनारे पर जा लगाया। . . . धर्म के मुरझा चुके और सूख चुके उपवन हेतु वे अनुकम्पा की वर्षा एवं उजड़ चुकी फुलवाड़ी के माली और दुख-दर्द के सांझीदार थे। परंतु वे थे कौन ? हां, वे थे— श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी, जिनके नाम से सारा संसार अच्छी तरह परिचित है। जिस पौधे को श्री गुरु नानक देव जी ने लगाया था, श्री गुरु अरजन देव जी . . . श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी ने अपनी शहादत देकर और रक्त-जल देकर पाला-पोसा था, अपनी सेवाएं देकर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपनी माता, चार सुपुत्रों, पांच प्यारों और सहस्त्रों श्रद्धालु सिक्ख दुलारों के रक्त की किनारों तक भरी नहरों के जल से ऐसा पुष्ट किया कि आखिर वह फल लाया। वे फल क्या थे ? भ्रातृत्व, भक्ति और प्रेम तथा ऐसे फल, जिनका छिलका अकाल पुरख की पूजा, जिनका गूदा मानव-प्रेम जिनकी गुठली भक्ति-भाव और जिनका मीठा रस मानवता थी।''

ऐसे महान सर्वस्वदानी, महान तपस्वी, परम योद्धा, साहिब-ए-कमाल, बादशाह दरवेश, संत-सिपाही, महान उपकारी, परम दयालु, दशमेश पिता, कलगीधर पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को शत्-शत् नमन, जिनके पावन प्रकाश के परम उद्देश्य को रूपायित होते देख-सुन मानवता विस्माद में आ जाती है। मात्र ४२ वर्ष इस मात लोक में विचरण करते हुए महान कर्मयोगी, धर्म-योद्धा श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने भक्ति-शक्ति, ज्ञान, वैराग्य, अटूट निष्ठा और संकल्प की ऊर्जा से मानवीय एकता-अखण्डता में जो विलक्षण योगदान दिया, वह उनके सर्वतोमुखी प्रखर व्यक्तित्व का ज्वलंत उदाहरण है, जो दुनिया में और कहीं नहीं मिलता।

मानवी चेतना के ज्योति-पुंज : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी

*-स. हरचरन सिंघ**

सिक्ख इतिहास का गौरव रहा है कि सिक्खों में ऐसी महान हस्तियां जन्म लेती रही हैं, जिनके महान कार्यों और कुर्बानियों की खातिर विश्व-इतिहास में उन्हें सम्मानित स्थान प्राप्त है।

ऐसी ही एक शख्सियत श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी हैं, जिनका इस धरती पर आगमन महान शहीद श्री गुरु तेग बहादर जी एवं माता गुजरी जी के घर सन् १६६६ ई. में पटना साहिब (बिहार) में हुआ। वर्तमान में इस पवित्र स्थान पर एक भव्य गुरुद्वारा तख्त श्री हरिमंदर जी, पटना साहिब सुशोभित है।

गुरु साहिब ने लगभग ४२ वर्ष के जीवन-काल में वे कारनामे कर दिखाए जो किसी की सोचनी में भी नहीं थे। अपने पिता श्री गुरु तेग बहादर साहिब को बलिदान हेतु भेजना, फिर खालसा पंथ की साजना, अपने चार वीर सुपुत्रों को धर्म की रक्षा की खातिर न्यौछावर करना ऐसी लासानी मिसाल है जो दुनिया के किसी भी धर्म के इतिहास में मिलनी असंभव है। वीर सुपुत्रों के बलिदान के पीछे आपके विचारों को निम्न पंक्तियां जागृत करती हैं :

इन पुतरन के सीस पर वार दिए सुत चार।
चार मूए तो क्या हुआ जीवत कई हजार।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का जिस समय प्रकाश (जन्म) हुआ, उस समय भारतवर्ष में अत्याचारी मुगल शासक औरंगजेब का शासन था। उसने प्रतिदिन सवा मण अर्थात् लगभग ५० किलोग्राम वजन के बराबर जनेऊ उतारने का प्रण किया था, जिसके फलस्वरूप हजारों की सख्या में हिंदू लोग अपना धर्म परिवर्तन करने पर आतुर थे। पंडित कृपा राम के नेतृत्व में आए हिंदुओं की दर्दमयी गाथा को सुनकर दयावान, करुणा के सागर श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने शरणगत के धर्म की रक्षा हेतु आत्म-बलिदान देकर सबको हैरत में डाल दिया। अगर समय रहते नवम गुरु जी बलिदान न देकर, श्वासहीन हो चुकी जनता के हृदय में स्वाभिमान की ज्वाला न प्रज्वलित कर कुर्बान होने की जीवन-युक्ति न प्रदान करते तो हिंदुस्तान का इतिहास आज कुछ और ही होता।

इसी विषय में डॉ. गोकुल चंद नारंग लिखते हैं :—

''अगर दशमेश गुरु श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी उस विकट समय में औरंगजेब जालिम मुगल सम्राट की टक्कर में सामने न आते तो यकीन मानो हिंदू धर्म का दीपक सदा के लिए बुझ जाता।''

मुस्लिम सूफी कवि साँई बुल्लेशाह अपने

**६९/११, निकट गुरुद्वारा साहिब, पुरानी रेलवे लाइन, आर. एस. पुरा, जम्मू-१८११०२, फोन : ९४१९६-२४२७८*

शब्दों में लिखते हैं :

न कहूं जब की, न कहूं तब की,
बात कहूं मैं अब की।
अगर न होते गुरु गोबिंद सिंघ,
सुन्नत होती सब की।

अपने जन्म के सम्बंध में गुरु साहिब अपनी बाणी 'बचित्र नाटक' में फरमान करते हैं कि सर्वशक्तिमान अकाल पुरख की आज्ञा से ही मैंने उनका सेवक बनकर उनके द्वारा सौंपे गए कार्यों को पूरा करने के लिए इस मृत्युलोक में जन्म लिया है :

जो हम को परमेसर उचरिहैं ॥
ते सभ नरक कुंड महि परिहैं ॥. . .
मै हो परम पुरख को दासा ॥
देखन आयो जगत तमासा ॥. . .
हम इह काज जगत मो आए ॥
धरम हेत गुरदेव पठाए ॥
जहां तहां तुम धरम बिथारो ॥
दुसट दोखीअनि पकरि पछारो ॥४२ ॥६ ॥

वास्तव में गुरु साहिब के जीवन का असल उद्देश्य दुष्टों और दमनकारियों द्वारा हिंदुस्तान की दबी-कुचली, मुर्दा हो चुकी जनता को आजाद करवाना था। इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति हेतु गुरु जी जीवन भर संघर्षरत रहे। मुगल शासकों के विरुद्ध उन्होंने कई निर्णायक विजयी युद्ध किये। दुनिया के इतिहास में आदि समय से आज तक किसी भी समय में युद्ध हुए, उनका परिणाम भले कुछ भी रहा हो, परंतु उन सबके लिए उद्देश्य केवल निजी स्वार्थ, धन-सम्पदा, सत्ता, शक्ति और राजनीतिक प्रबलता को बढ़ावा देना ही था। ऐसे युद्धों को धर्म-युद्ध की संज्ञा देना धर्म की परिभाषा की तौहीन करना है, क्योंकि धर्म-युद्ध का उद्देश्य धर्म की स्थापना, धर्म की रक्षा करना और हर धर्म का सम्मान कायम रखना होता है।

आर्य समाज के महान विद्वान लाला दौलत राय अपनी सुप्रसिद्ध पुस्तक 'सवाने उमरी गुरु गोबिंद सिंघ', जो वर्ष १९०१ ई. में प्रकाशित हुई थी, में गुरु जी के सम्बंध में कुछ इस प्रकार से लिखते हैं :—

''मैंने रामायण और महाभारत ग्रंथों का विस्तृत अध्ययन किया और उस समय हुए युद्धों की रूप-रेखा को भली-भांति खोजा भी है। मैंने पाया कि ये युद्ध इस समय के राजाओं के मध्य हुए हैं, जिनका मुख्य कारण स्त्री ही नज़र आती है और यदि इन युद्धों में से स्त्री को निकाल दें तो युद्धों का कोई औचित्य नज़र नहीं आता है। दूसरी ओर, जब मैं दशमेश गुरु श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा किये गए धर्म-युद्धों पर अपनी नज़र दौड़ाता हूं तो मुझे एक तरफ समय की हुकूमत और दूसरी तरफ एक फकीर नज़र आता है, जो धर्म, समाज, मानवता एवं मज़लूमों की रक्षा हेतु, सभ्य सस्कृति की रक्षा हेतु अपना सर्वस्व न्यौछावर करता हुआ ईश्वर का शुक्र अदा कर रहा है। विद्वानों का मत है कि संसार में युद्ध का कारण केवल जर, जोरू और जमीन होता है, लेकिन इस फकीर ने सभी विकल्पों, सभी तर्कों और सभी कारणों को झूठा साबित कर दिखाया है।''

मुस्लिम लेखक योगी अल्लाह यार खान लिखते हैं :

करतार की सौगंध है,
नानक की कसम है।
जितनी भी हो गोबिंद की
तारीफ वो कम है ॥१८ ॥

वास्तव में गुरु जी संसार में व्याप्त ईर्ष्या, द्वेष, भय, स्वार्थ को दूर करने, मानव जीवन-मूल्यों, नेकी, सच एवं परम आदर्शों की स्थापना के लिए अंतिम समय तक लड़ते रहे। गुरु साहिब कथनी और करनी के पूरे थे। आप जुल्म और अन्याय के आगे झुक जाने को अधर्म समझते थे। आपने हमेशा उच्च आदर्शों में विचरने का आदेश दिया। आपकी दृष्टि में हर जाति, धर्म, नस्ल, संप्रदायों के लोग समान थे। आपका फरमान है :

कोऊ भइओ मुंडीआ संनिआसी कोऊ जोगी भइओ
कोऊ ब्रहमचारी कोऊ जती अनुमानबो ॥
हिंदू तुरक कोऊ राफजी इमाम साफी मानस की
जात सबै एकै पहिचानबो ॥१८ ॥८५ ॥

आप जी ने सिखाया कि जुल्म के विरुद्ध संघर्ष करते हुए अगर अन्य रास्ते असफल हो जाएं तो खड़ग उठानी जायज है। आपका फरमान है :

चूं कार अज हमह हीलते दर गुजशत ॥
हलालस्सत बुरदन ब शमशीर दसत ॥

गुरु साहिब की विचारधारा भक्ति और शक्ति के सिद्धांत पर आधारित है। आपके अनुसार परमात्मा के नाम-सिमरन में ही वास्तविक सिमरन, कर्म, जप-तप और पूजा है। आप समझाते हैं कि अकाल पुरख के अतिरिक्त इस दुनिया का पालक अन्य कोई नहीं, इसलिए उसकी आराधना को छोड़कर अन्य की पूजा करना व्यर्थ एवं फोकट कर्म हैं।

गुरु जी के अनुसार परमात्मा सर्वव्यापक है। वह किसी जंतर-मंतर-तंतर का मोहताज नहीं है और न ही वह किसी आम या खास के वश में है।

गुरु जी ने जहां एक ओर खालसा पंथ की स्थापना कर अपने सिक्खों को 'खालसा' का संबोधन प्रदान किया, वहीं गुरु-मर्यादानुसार जीवन जीने का मार्ग भी प्रशस्त किया। हर सिक्ख को श्री गुरु ग्रंथ साहिब के सिद्धांतों को मानने के लिए प्रेरित किया। आपका हुक्म है :

आगिआ भई अकाल की तबै चलायो पंथ।
सब सिक्खन को हुकम है गुरू मानिओ ग्रंथ।

आज भी गुरु का प्रत्येक सिक्ख सरबत्त के भले की कामना करते हुए सबकी कुशलता की अरदास करता है। यह प्रथा कहीं अन्य देखने को नहीं मिलती :

नानक नाम चढ़दी कला।
तेले भाणे सरबत्त दा भला।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी महान विद्वान, साहित्यकार, दार्शनिक एवं शस्त्रों-शास्त्रों के उच्च कोटि के ज्ञाता थे। गुरु जी का सम्पूर्ण जीवन मानवता के लिए रोशन-दीप है, जिससे मनुष्य प्रेरणा लेकर उत्साह, साहस, उमंग और जीवन की बुलंदियों को छू सकता है। आपका सानी कोई नहीं है। गुरु जी का जीवन-दर्शन आज भी भाईचारक, एकता, मानव-समानता एवं अखंडता का प्रतीक है।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी : सामाजिक सरोकार

*-डॉ. तेजिंदर पाल सिंघ**

सिक्ख धर्म में 'गुरु' का केंद्रीय स्थान है, जो सैद्धांतिक और अनुप्रयुक्त रूप में प्रकाशमान होता है। गुरमति के अनुसार 'गुरु', समय-स्थान और कारण-कार्य में बंधा कोई सांसारिक व्यक्ति नहीं, बल्कि वह तो परमात्मा की 'ज्योति' का प्रकट रूप है, एक ईश्वरीय करामात है। 'गुरु' इतना महान है कि परमात्मा की सभी दैवी शक्तियां इसमें शामिल हैं :

गुरमुखि नादं गुरमखि वेदं गुरमुखि रहिआ समाई॥
गुरु ईसरु गुरु गोरखु बरमा गुरु पारबती माई॥

(पन्ना २)

'जन्म-साखी साहित्य' अनुसार श्री गुरु नानक देव जी 'आदि गुरु' के रूप में 'पारब्रह्म परमेसर' से 'गुर परमेसर' होकर अवतरित होते हैं। गुरमति के अनुसार मानव की धरती पर आमद किसी ख़ास मंतव्य की प्राप्ति हेतु हुई है :

भई परापति मानुख देहुरीआ॥
गोबिंद मिलण की इह तेरी बरीआ॥

(पन्ना ३७८)

इसलिए गुरु की आवश्यकता पर अधिक ज़ोर दिया गया है :

बिनु सतिगुर किनै न पाइओ
बिनु सतिगुर किनै न पाइआ॥
सतिगुर विचि आपु रखिओनु
करि परगटु आखि सुणाइआ॥ (पन्ना ४६६)

इस लेख में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के बारे में चर्चा की जा रही है। लेख के दो भाग हैं, जिनमें से पहले भाग में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की गुरुआई के बारे में विचार की गई है और दूसरे भाग में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के सामाजिक सरोकारों के बारे में ज़िक्र है। दूसरे शब्दों में इस भाग में गुरु साहिब द्वारा मानव-कल्याण के लिए किये कार्यों का विश्लेषण किया गया है। इस कार्य के लिए विभिन्न गुरमुखी स्रोतों को अध्ययन का आधार बनाया गया है।

श्री गुरु नानक देव जी को 'गुरुआई' अकाल पुरख ने खुद प्रदान की और श्री गुरु नानक देव जी ने यही गुरुआई बख्शीश रूप में श्री गुरु अंगद देव जी को दी। श्री गुरु नानक देव जी और श्री गुरु अंगद देव जी में अंतर केवल शरीर का था, 'ज्योति' दोनों की एक थी।

श्री दसम ग्रंथ साहिब में भी श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी अपने जगत में आने का प्रयोजन बताते हैं कि वे संसार में धर्म की स्थापि के लिए आए हैं। धर्म के मार्ग में अवरोध उत्पन्न करने वाले

**असिस्टेंट प्रोफेसर (धर्म अध्ययन विभाग), यूनिवर्सिटी कालेज, मीरांपुर, जिला पटियाला, फोन : ९९८८०-०४७३३*

दुष्टों को सुधारना गुरु साहिब का परमउद्देश्य था :

हम इह काज जगत मो आए ॥
धरम हेत गुरदेव पठाए ॥
जहां तहां तुम धरम बिथारो ॥
दुसट दोखीअनि पकरि पछारो ॥

(बचित्र नाटक)

ऐतिहासिक तौर पर श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी ने जिस समय शहादत देने का फ़ैसला कर लिया तो उन्होंने दिल्ली जाने से पहले अपना उत्तराधिकारी स्थापित करने के लिए बाल गोबिंद राय (श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी) को तैयार किया :

स्री बालमुकंद सनान कराए।
अदभुत बसत्र भूखन पहिराए।
तिलक गुराई मसतक कीना।
नालयेर भेट प्रभ दीना ॥...[१]

भाई सुक्खा सिंघ के अनुसार श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी तीनों काल में विचरण करने वाली ज्योति हैं:

भूत भविख भवान सदा इम जानियै।
हो तवन पुरख की जोति प्रगट पहिचानियै ॥[२]

भाई कुइर सिंघ के अनुसार जिस गुरुआई पर दसम पातशाह विराजमान हुए, यह तो आदि गुरु की है और दसवाँ गुरु, आदि गुरु (श्री गुरु नानक देव जी) का ही दसवाँ रूप है :

नानक की गादी बर जोई ।...
सोढी रामदास को नाती।
गोबिंद सिंघ नाम सुख क्रांती ॥[३]

भाई कुइर सिंघ के अनुसार दस गुरु साहिबान में एक ही ज्योति थी :

हरि गोबिंद को अरि नाती निससतहि
ऊच खरो यहि बात सुनाही।...
गोबिंद सिंघ बली प्रगटयो
दस महलन मै पतिसाह सु आही ॥[४]

गुरु का सम्बन्ध केवल आध्यात्मिकता के साथ नहीं, बल्कि वह सामाजिक अगुआ भी है। गुरमति ने समाज के प्रति उदासीनता नहीं सिखायी और न ही इसमें खचित हुआ होना स्वीकार किया है। गुरबाणी में इस प्रकार की जीवन-दृष्टि के लिए परविरती कर्म, माया में उदास, घर ही माहि उदास, आसा महि निरासा; अंजन माहि निरंजनि आदि अनेक प्रवचन प्राप्त होते हैं।[५] गुरमति में गृहस्थ जीवन प्रधान है।[६]

पश्चिमी विद्वान जोखिम वाक बताता है कि किसी भी दैवी शख्सियत का अपना एक निजी धार्मिक अनुभव होता है, जिसके तीन प्रकटावे होते हैं — सैद्धांतिक, पूजाचार और सामाजिक।[७] इस लेख का सम्बन्ध इनमें से तीसरे प्रकटावे (सामाजिक) के साथ है।

समाज लगभग प्रत्येक धर्म को किसी न किसी रूप में प्रभावित करता है। इस सम्बन्ध में 'पवित्र' शख्सियत/धर्म-संस्थापक (गुरु) का महत्वपूर्ण योगदान होता है, क्योंकि अपने 'दैवी' गुणों के कारण ऐसी शख्सियत समाज में परिवर्तन लाने के योग्य होती है, जिसे लोग स्वीकार कर उसका सम्मान भी करते हैं। ऐसी

पवित्र शख्सियत का संसार में आने का कोई परम उद्देश्य होता है। संसार में प्रकट होने के पशचात् वह एलान करता है कि उसे परमात्मा की तरफ से कोई विशेष कार्य सौंपा गया है, जिसकी पूर्ति के लिए वह प्रकट हुआ है।

उक्त प्रसंग में श्री गुरु नानक देव जी द्वारा स्थापित धर्म अपने आप में एक सृजनात्मक और इंकलाबी धर्म के रूप में स्थापित हुआ, जिसका उद्देश्य किसी प्रकार के सुधारवाद या परिवर्तन तक सीमित न होकर, नये समाज का निर्माण करना था। इसका आधार-स्रोत गुरु साहिब का धार्मिक अनुभव था। इस हवाले में यह भी कहना अनुचित नहीं होगा कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का उद्देश्य किसी प्रकार के समाज-शास्त्र का निर्माण करना नहीं था, न ही वे किसी प्रकार के समाज-शास्त्री थे, बल्कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने सिक्ख पंथ को संपूर्णता प्रदान करने और मानवता की ग़ुलामी की जंजीरें उतारने के लिए अपने गुरुआई-काल में अनेक बड़े प्रयास किये, जिनमें से मसंद-प्रथा ख़त्म कर ख़ालसे की सृजना करना प्रमुख था।

वर्णनयोग्य है कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को जिस समय गुरुआई प्राप्त हुई, उस समय हालात बहुत नाजुक थे। उस समय तक सिक्ख पंथ की इंकलाबी चढ़ाई हो चुकी थी, जिससे मुग़ल सलतनत और ईर्ष्यालु पक्ष बहुत दुखी थे। फलस्वरूप, गुरु साहिब ने श्री गुरु नानक देव जी द्वारा चलाए मिशन को संपूर्णता प्रदान करने के लिए १४ जंगें लड़ीं।[८]

श्री गुरु नानक देव जी ने जब 'संगत' की स्थापना की तो उसी समय से इसके निरंतर रूप से प्रफुल्लित होने के आसार बनने लगे थे। श्री गुरु अंगद देव जी के समय में इन अनुयायियों की संख्या में लगातार विस्तार होता गया, जिस कारण 'संगत' के लिए स्थानीय केंद्र खोलने पड़े। इन 'संगत' को सुचारू ढंग से नेतृत्व प्रदान करने के लिए श्री गुरु रामदास जी ने 'मसंद-प्रथा'[९] आरंभ की, जिसे विधिपूर्वक रूप श्री गुरु अरजन देव जी ने दिया। श्री गुरु अरजन देव जी के समय तक 'संगत' का प्रसार पंजाब से बाहर तक हो गया था।

मसंदों का चयन पवित्रता, वफ़ादारी और उच्च आचरण के आधार पर किया जाता था।[१०] मसंद, क्योंकि गुरु साहिब द्वारा स्थापित किए गए थे, इसलिए संगत की तरफ से उन्हें सम्मान मिलना स्वाभाविक था। इस कारण भाई गुरदास जी भी मसंद के लिए 'गुरमुख' शब्द इस्तेमाल करते हैं।[११] श्री गुरु अरजन देव जी ने मसंदों का पुनर्गठन कर गुरु-घर के कार्यों को सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए आर्थिक स्तर पर 'दसवंध' का ठोस रूप बनाया। मसंदों का मुख्य कार्य सिक्खी-प्रचार के साथ-साथ संगत से दसवंध इकट्ठा करना था।[१२] दसवंध मसंदों द्वारा वैसाखी के अवसर पर गुरु-दरबार में पहुँचाया जाता था।

मसंद, गुरु साहिब और संगत के दरमियान

एक कड़ी का काम किया करते थे, जो केवल प्रचार या दसवंध ही इकट्ठा नहीं करते थे बल्कि गुरु साहिब द्वारा स्थापित होने के कारण, वे जहाँ गुरु साहिब को जवाबदेय थे, वहीं वे संगत के स्थानीय मसले भी हल किया करते थे। 'दाबिस्तान' की गवाही के अनुसार, मसंद संगत से इकठ्ठा किये पैसे को खुद ख़र्च नहीं किया करते थे।[१३] गुरु-घर पहुँचते समय मसंदों को गुरु साहिब द्वारा सिरपाउ देकर सम्मानित भी किया जाता था।

बेशक मसंद-प्रथा ने सिक्ख धर्म के विगास में बहुमूल्य योगदान दिया, परन्तु समय के अनुसार इसमें गिरावट आनी शुरू हो गई। इसका एक मुख्य कारण मसंदों द्वारा 'पूजा का धान' खाना था। मसंद, जब तक अपनी मेहनत पर गुज़ारा करते रहे, गुरु के भय-भावना में रहे, परंतु दसवंध की लगातार वृद्धि ने इन्हें अपने ईमान से डिगा दिया। दूसरा कारण, इनमें कुछ नकली मसंद भी प्रवेश कर गए थे, जिन्होंने संगत को गुमराह करना शुरू कर दिया। दसम पातशाह तक मसंदों की हालत बहुत दयनीय हो गई थी। सैनापति बताता है कि संसार के कल्याण हेतु गुरु साहिब ने मसंदों को दूर किया।[१४] गुरु साहिब ने संगत को स्पष्ट तौर पर मसंदों को छोड़ने का आदेश दिया और उन्हें कहा कि वे दसवंध-भेट अपने घर पर ही रखें।[१५]

वास्तव में मसंदों के उक्त व्यवहार के पीछे उनका अपना स्वार्थ था, क्योंकि वे गुरु की जगह खुद गुरु ही बन बैठे थे। १६ इसी कारण गुरु साहिब ने मसंदों की कारगुज़ारी देखते हुए सबसे पहले सिक्ख संगत को मसंदों से दूर किया :

जो करि सेव मसंदन की कहै
आनि प्रसादि सबै मुहि दीजै।
जो कछु माल तवालय सो
अब ही उठि भेट हमारी ही कीजै॥
मेरो ई धयान धरो निसि बासुर
भूल कै अउर को नामु न लीजै।
दीने को नामु सुनै भजि रातहि
लीने बिना नहि नैकु प्रसीजै।[१७]

खालसा सृजित करना : श्री गुरु नानक देव जी द्वारा शुरू किया मिशन अपने अंतिम पड़ाव पर उस समय आता है जब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ख़ालसा की सृजना करते हैं। दूसरे शब्दों में, खालसा सृजित करना श्री गुरु नानक देव जी के मिशन का अंतिम पड़ाव था। इसके साथ गुरु साहिब ने दबी- कुचली जनता में एक नयी रूह भर दी, जिससे समाज में नयी क्रांति आई।

भाई कुइर सिंघ के अनुसार वैसाखी वाले दिन श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने संगत का एक बड़ा जलसा किया और भरे दीवान में गुरु साहिब ने एक शीश की माँग की :

सनमुख पूरा सिख है कोई।
सीस भेट गुर देवे जोई॥[१८]

गुरु साहिब ने तीन बार अपना वचन दोहराया। फलस्वरूप, एक सिक्ख गुरु के सम्मुख उठा, जिसे गुरु साहिब तंबू में ले गए।

तंबू में से गुरु साहिब जब वापस आए तो उनकी कृपाण खून से सनी हुई थी। ख़ून देख कर कइयों के दिल कांप उठे। गुरु साहिब ने दूसरी बार फिर एक शीश की माँग की। गुरु साहिब ने ऐसा पाँच बार किया। पाँच शीश लेने के बाद गुरु साहिब पाँचों को (जिंदा) तंबू से बाहर लेकर आए। इसके पश्चात् सतलुज से जल मंगवा कर सरब लोह के बाटे में डाला गया, जिसमें बतासे डाले। पाँच बाणी का पाठ पढ़ने के पश्चात् तैयार किया 'अमृत' उन पाँच सिक्खों को छकाया गया। उसके बाद पाँच सिंघों को रहित दृढ़ करवाई गई। इन पाँच को गुरु साहिब ने 'पांच प्यारे' का ख़िताब दिया। इस सारी प्रक्रिया के फलस्वरूप नवसृजित पंथ 'खालसा' नाम से विख्यात हुआ।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने ख़ालसा सृजित कर मानव को हर प्रकार के धार्मिक-सामाजिक प्रबंध की जकड़ से मुक्त कर आदर्श मानव की सृजना की। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी मानव को प्रत्येक कर्मकांडी मुहताजी से मुक्त करना चाहते थे। ख़ालसा की सृजना कर मानव के पैरों में जाति, वर्ण या मजहब की पड़ी बेड़ियां गुरु साहिब ने काट दीं, जिस कारण ख़ालसे को कोई काम-धंधा करने में संकोच नहीं। ख़ालसा के लिए सभी बराबर हैं। अमीर-गरीब, ऊँच-नीच या जाति-नस्ल का कोई भेद ख़ालसा के लिए महत्व नहीं रखता।

अकाल पुरख की फ़ौज के रूप में ख़ालसा का उद्देश्य न्याय और नेकी की स्थापना करना है। हर ज़ालिम के ज़ुल्म से निर्भय होकर इस कार्य की पूर्ति के लिए यत्नशील होना ही ख़ालसे का आदर्श है। खालसा इस दुनिया से नहीं, दुनिया के भय से मुक्त होने की तरफ रुचित है। इसकी असली मुक्ति तो हक, सच तथा न्याय के मार्ग पर चलते हुए अपने आप को कुर्बान करना है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने इसे अपने रूप में कल्पित किया और फरमान किया— *''खालसा मेरो रूप है ख़ास।''*

ख़ालसे की सृजना करने का एक मुख्य उद्देश्य तथाकथित नीची जाति वाले मनुष्यों के भीतर हर प्रकार की कुरीति बुराई के साथ टकरा जाने का साहस भरना था। बदी, ज़ुल्म और अन्याय के सक्रिय विरोध के बीज श्री गुरु नानक साहिब और उनके उत्तराधिकारी गुरु साहिबान की बाणी एवं व्यवहार दोनों में मिलते हैं। खालसा बनाने के पीछे श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का विचार अकाल पुरख के हुक्म को धरती पर साकार करना था। इस विचार के पीछे मूल विवेक यह था कि व्यक्ति निर्भय और वैर-रहित होकर, स्वतंत्रता का आनंद मानते हुए प्रकृति, प्राकृतिक शक्तियों, साथी मनुष्यों एवं समाज के साथ एकसुर होकर आत्माभिमान भरपूर जी सके। मानव अकाल पुरख के हुक्म को धरती पर लागू करने का एक साधन-मात्र है। मृत्यु का भय ही एक ऐसी चीज़ है जो इंसान को स्वतंत्रता का संपूर्ण आनंद नहीं ले देती। मृत्यु के

भय से मुक्त व्यक्ति असीम अकाल पुरख के साथ एकसुर हो जाता है।

श्री गुरु नानक देव जी से श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के ऐतिहासिक दौर से दृष्टिगोचर होता है कि श्री गुरु नानक देव जी के समय बनाई 'संगत' ही श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के समय 'खालसा' रूप में तबदील होती है। भाई सुक्खा सिंघ ने बड़े ज़ोरदार तरीके से यह साबित किया है कि खालसा, पहले सृजित की हुई 'संगत' का ही रूप था। इसकी तैयारी श्री गुरु नानक देव जी से ही शुरू हो गई थी, जिसे श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अंतिम रूप दिया :

जहां जहां संगत गुरपयारी।
भई खालसा सरब सु सारी॥
लिख लिख दीने हुकम पठाई।
अनै बचन सोई जिन जाई॥[१९]

खालसा सृजित करने के बाद सिक्ख एक जत्थेबंदक ढांचे में बंध गए। उनकी समूची जीवन-शैली एक नये रूप में सामने आई। श्री अनंदपुर साहिब, ख़ालसा के लिए एक ऐसा नगर-राज्य बना जो जब्र-ज़ुल्म के ख़िलाफ़ लड़ने-मरने के लिए सिक्खों के मन में पक्के तौर पर घर कर गया। इस संदर्भ में 'खालसा' एक संस्था के तौर पर उभर कर सामने आया, जो जब्र-ज़ुल्म और मानवता-विरोधी बातों के विरोध में खुलेआम संघर्ष था।

युद्ध : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को जिस समय गुरुआई प्राप्त हुई, उस समय हालात बहुत नाज़ुक थे। उस समय तक सिक्ख पंथ की इंकलाबी चढ़ाई हो चुकी थी, जिससे मुग़ल सलतनत और ईर्ष्यालु दल बहुत दुखी थे। फलस्वरूप, गुरु साहिब ने श्री गुरु नानक देव जी द्वारा चलाए मिशन को संपूर्णता प्रदान करने के लिए १४ युद्ध किए।[२०]

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को गुरुआई :

श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा १६०४ ई. में आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब की संपादना करने के साथ धर्म-ग्रंथों के इतिहास में एक नया अध्याय शुरू होता है। सिक्ख सिद्धांत के अनुसार श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी अकाल पुरख से सीधी आई है। २१ गुरु साहिबान और अकाल पुरख के दरमियान कोई मध्यस्थ नहीं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी बाणीकारों द्वारा अलग-अलग समय पर उच्चारण की गई, जिसे सैद्धांतिक स्तर पर पहले ही गुरु के रूप में स्वीकार किया जा चुका है। गुरु साहिबान द्वारा दिया उपदेश हमेशा ही श्री गुरु ग्रंथ साहिब के रूप में विद्यमान रहेगा।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने दक्षिण में नांदेड़ नामक स्थान पर ज्योति-जोत समाने से पहले रस्मी तौर पर श्री गुरु ग्रंथ साहिब (जिसमें 'शबद' समाया है) को सिक्खों का शाश्वत गुरु स्थापित कर गुरुआई प्रदान की।

गुरु साहिब ने खुद ही पाँचवे स्वरूप में आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब की संपादना की, उपरांत दसवें जामे में श्री गुरु तेग बहादर साहिब की बाणी (आदि) श्री गुरु ग्रंथ साहिब में शामिल

कर किसी प्रकार का परिवर्तन होने की संभावना पर पक्की रोक लगा दी थी। उन्होंने ग्रंथ-पंथ की गुरुता में अपना रूप बदल कर सिक्खों के नेतृत्व के लिए अपनी ज्योति-युक्ति को सदा के लिए स्थिर कर दिया, ताकि भविष्य में गुरु अवतरण की कभी ज़रूरत महसूस ही न हो और गुरु अपने सेवकों के सदा अंग-संग रहे। इस तरह सिक्खों का विश्वास है कि नानक-ज्योति सदा के लिए गुरु-ग्रंथ, गुरू-पंथ में निवास कर रही है। यह ज्योति श्री गुरु नानक देव जी से ग्रंथ-पंथ की गुरुआई तक कई रूपों में सिक्खों का मार्गदर्शन करती रही है। वर्णनयोग्य है कि शारीरिक रूप बदलने (शरीर से श्री गुरु ग्रंथ साहिब रूप में परिवर्तित होने) के साथ गुरु-ज्योति की एकता भंग नहीं हुई।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब को गुरुआई मिलने के ऐतिहासिक सत्य की पुष्टि में फ़ारसी, पंजाबी, उर्दू और अंग्रेज़ी लिखतों के काफ़ी भंडार हमारे पास मौजूद हैं, परंतु यहाँ हम लेख की सीमा को देखते हुए केवल दो स्रोतों में से हवाले अंकित कर रहे हैं :—

भट्ट वहियां : भट्ट वहियां में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा श्री गुरु ग्रंथ साहिब को गुरुआई देने के बारे में इस तरह स्पष्ट वर्णन है:—

''गुरू गोबिंद सिंघ जी महल दसमाँ... संमत १७६५ कारतक माह की चउथ शुकला पखे बुधवार के दिहु दैआ सिंघ से बचन होआ ग्रंथ साहिब लै आउ बचन पाइ दैआ सिंघ ग्रंथ जी लै आए। गुरू जी पाँच पैसे नलीएर राख के मथा टेका। सरबत से कहा मेरा बचन है- मेरी जगहा आगे-से गुरू-श्री ग्रंथ साहिब को जाननां। जो सिख जानेगा- तिस की घाल थाँइ पएगी। गुरू बहुड़ी करेगा।[२२]

श्री सरब लोह ग्रंथ : श्री सरबलोह ग्रंथ में श्री गुरु ग्रंथ साहिब की गुरुआई से संबंधित स्पष्ट हवाले मिलते हैं :—

दुती रूप श्री गुरू ग्रंथा।
दास गोबिंद फतहि सतिगुर को
खालसा गरंथ गुरू रूप बधंता॥
दोहरा। सभ गुर परगट भए पूरन हरि अवतार।
जग मग जोति बिराज ही श्री गुरू गरंथ मझार॥
जो दरसिओ चहि गुरू को सो दरसे गुरू गरंथ।
पढे सुने स्वारथ लहै प्रमारथ को पंथ।।
वाहिगुरू गुरू गरंथ जी उते जहाज उदार।
जो सरधा धर सेवहे सो उतरे भव पार॥[२३]

उपरोक्त स्रोतों से स्पष्ट होता है कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपने जीवन के अंतिम समय ज्योति-जोत समाने से पहले रस्मी तौर पर श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को गुरुआई प्रदान की।

सार रूप से हम कह सकते हैं कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का ऐतिहासिक प्रकटावा दैवी मिशन के अधीन था। यह मिशन पूरा करने के लिए गुरु साहिबान को २३९ वर्ष (१४६९ से १७०८ ई.) का समय लगा। इसके अंतर्गत गुरु साहिबान ने मानव की हर प्रकार की ग़ुलामी दूर कर उसे इज्जत-मान के साथ जीना सिखाया।

गुरु साहिब द्वारा किये समूचे कार्य उनकी युक्ति का ही प्रकटावा था। वे चाहते थे कि 'पंथ' के नेतृत्व में एकत्र हो रहे लोगों को परंपरागत रीतियों से दूर रख कर, उन्हें एक नया भाईचारा स्थापित करने में सफलता प्राप्त हो सके।

हवाल और टिप्पणियाँ :

१. सरूप दास भल्ला, महिमा प्रकाश (भाग दूसरा, खंड- २, (संपा.), डॉ. उत्तम सिंघ (भाटिया), भाषा विभाग पंजाब, १९९९ (तीसरी बार), साखी/ बंद/ पृष्ठ -१८/२९-३०/७०९.

२. भाई सुक्खा सिंघ, गुरबिलास पा: १०, (सम्पा.), डॉ. गुरशरन कौर (जग्गी), भाषा विभाग, पटियाला, १९८९ (दूसरी बार), अध्याय/ बंद/ पृष्ठ - ५/ ५/ ५७.

३. भाई कुइर सिंघ, गुरबिलास पा. १०, (सम्पा.) शमशेर सिंघ अशोक, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, अध्याय/ बंद/ पृष्ठ-१०/ २८/ १२४.

४. वही, अध्याय/ बंद/ पृष्ठ - २१/ २/ २५७.

५. ''अंजन माहि निरंजनि रहीऐ जोग जुगति इव पाईऐ॥'' श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ७३०; ''जैसे जल महि कमलु निरालमु मुरगाई नै साणे॥'' श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ९३८; ''विचे ग्रिह सदा रहै उदासी जिउ कमलु रहै विचि पाणी हे॥'' वही, पन्ना १०७०- ७१.

६. ''गिआनन मै गिआन अरु धिआनन मै धिआन गुर सकल धरम मै ग्रिहसतु प्रधान है॥'' सेवा सिंघ (भाई), कबित्त सवये भाई गुरदास जी सटीक, सिंघ ब्रादर्स, श्री अमृतसर, २००१ (तीसरी बार), पृष्ठ ३७६.

७. *Joachim Wach, Types of Religious Experience* (Christian and Non-Christian), University Press, Chicago, 1951, pp. 30-36.

८. भंगाणी, नदौण, हुसैनी, बसाली, कलमोट, अनंदपुर (३), चमकौर, मुकतसर, बघौर, आगरा, कलमौर और निरमोह।

९.'मसंद' शब्द फ़ारसी के शब्द 'मसनद' से बना है, जिसका तात्पर्य ऊँची जगह है, इसलिए 'गद्दी' शब्द भी इस्तेमाल किया जाता था। सिक्ख प्रचारक, जो गुरु साहिबान के प्रतिनिधि थे, उन्हें संगत में ऊँचे आसनों पर या गद्दी पर बिठाया जाता था। उन्हें 'मसनद' या 'मसंद' कहा जाता था। इनका एक और नाम 'राम दास' भी प्रचलित था। देखो : सिक्ख इतिहास, पृष्ठ २७, फुट नोट ५४.

१०. गोकुल चंद्र नारंग, सिक्ख मत दा परिवर्तन, (पंजाबी अनु.), पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, २००९, पृष्ठ ३२, फुट नोट १.

११. ''गुरमुखि वडिआ वडे मसंदा॥'' वारां भाई गुरदास जी, वार/ पउड़ी - ११/ २२.

१२. ज़िक्रयोग्य है कि मुग़ल-प्रबंध में बादशाह अपने अहलकारों से भेंट लेता था। इस संदर्भ में कई विद्वान (सिक्ख मत दा परिवर्तन, पृष्ठ ३२) गुरु-घर में आने वाले दसवंध को भी उक्त प्रबंध के साथ जोड़ कर देखते हुए इसे संगत पर लगा कर (*Tax*) समझते हैं। वास्तव में 'दसवंध' सिक्ख संगत द्वारा की सच्ची- सुच्ची किरत कमाई का दसवाँ भाग होता है, जो वे अपनी स्वेच्छा से गुरु-घर में देते थे। इतिहास में एक भी कोई ऐसा हवाला प्राप्त नहीं, जहाँ गुरु-घर में से किसी ने जबरी/ मजबूर कर दसवंध प्राप्त किया हो। संगत द्वारा अपनी ख़ुशी से मसंदों को दिया 'दसवंध' पैसा, फसल या किसी अन्य पदार्थ के रूप में होता था।

१३. हरचंद सिंघ (बेदी) (संपा.), 'नानक पंथी', डॉ. गंडा सिंघ की सिक्ख इतिहास स्रोत पुस्तक, खालसा कालेज, श्री अमृतसर, २०००, पृष्ठ १५७.

१४. ''जगत उधारन कारने सतिगुर कीओ बिचार।
कर मसंद तव दूर सब निरमल कर संसार।'' श्री गुर सोभा, अध्याय/बंद/ पृष्ठ - ५/ १३१/ ७९.

१५. ''मंनत गोलक अर दसवंध। घरि मै राखो तजो मसंद।
भेट कार सतिगुरु की होइ। जाइ हजूरि चढ़ावै सोइ।'' वही, ५/ १४१/ ८०.

१६. रणधीर सिंघ (संपा.), प्रेम सुमारग ग्रंथ, न्यू बुक कंपनी, जलंधर, २००० (तीसरी बार), पृष्ठ १०.

१७. शब्दार्थ दसम ग्रंथ साहिब (पोथी तीसरी), (संपा.), भाई रणधीर सिंघ, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, १९९४ (तीसरा संस्करण), पृष्ठ १२२२.

१८. कुइर सिंघ, गुरबिलास पातशाही १०, (संपा.), शमशेर सिंघ अशोक, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, १९९९ (तीसरी बार), अध्याय/ बंद/ पन्ना -९/ १०/ १०८.

१९. भाई सुक्खा सिंघ, गुरबिलास पातशाही १०, (संपा.), डॉ. गुरशरन कौर (जग्गी), भाषा विभाग, पटियाला, १९८९ (दूसरी बार), अध्याय/ बंद/ पृष्ठ - १२/ १३९/ १८१.

२०. भंगाणी, नदौण, हुसैनी, बसाली, कलमोट, अनंदपुर (३), चमकौर, मकतसर, बघौर, आगरा, कलमौर और निरमोह।

२१. ''धुर की बाणी आई॥''... श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६२८.

२२. भट्ट वही मुलतानी सिंधी, खाता जलहानो का।

२३. श्री सरब लोह ग्रंथ (भाग दूसरा), पृष्ठ ४९७.

अटूट जज़्बे का उदाहरण है श्री मुकतसर साहिब की जंग का इतिहास

-प्रो. किरपाल सिंघ बडूंगर*

श्री मुकतसर साहिब का इतिहास अटूट जज़्बे की उदाहरण है। यहाँ की जंग दुनिया के इतिहास में सामूहिक शहादत, असमतोल टक्कर और जीत के दृढ़ संकल्प की अद्वितीय मिसाल है। इस जंग में मुट्ठीभर सिंघों ने ५०० वर्ष पुराने साम्राज्य के भारी संख्या में मुलखईए का रास्ता रोक लिया और उसे अपने मकसद में कामयाब न होने दिया। अनंदगढ़ का किला छोड़ने के तुरंत बाद मुगलों और बाईधार के राजाओं ने अपनी कसमें और इकरार तोड़ कर सिक्खों के दसवें गुरु श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी सहित सभी सिंघों को ख़त्म करने की ठान ली। सरसा नदी में मुठभेड़ के बाद तथा चमकौर की जंग के पश्चात् सूबा-सरहिंद वजीर खान ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को ख़त्म करने के लिए मालवा देश में फ़ौज लेकर चढ़ाई की। खिदराणा की ढाब के पास पश्चिम दिशा में गुरु जी ने इस फ़ौज के साथ युद्ध करने की योजना बनाई थी। माझा से आए सिंघों का जत्था भी इसी समय आया हुआ था। इस जत्थे ने जब शाही लश्कर देखा तो ढाब की पूरबी दिशा में मोर्चे लगा लिए। इस युद्ध में ४० सिंघ शहीद हो गए, परन्तु उन्होंने शाही फ़ौज का दम उखाड़ दिया। शाही फ़ौज दो किलोमीटर आगे बढ़ कर भी गुरु साहिब तक न पहुंच सकी। सिंघों के एक छोटे-से जत्थे ने शाही फ़ौज का हमला नाकाम कर दिया था। शूरवीरता की यह अद्वितीय मिसाल श्री गुरु नानक साहिब जी और श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के महान आदर्शों और व्यवहारिक प्रेरणा का निष्कर्ष था। अकाल पुरख के हुक्म की पालना के उद्देश्य के लिए गुरु जी ने ख़ालसा पंथ की सृजना की थी। सिक्खी के मार्ग पर चलने के लिए सिर हथेली पर रखने की और किसी किस्म की कोई झिझक न रखने की शर्त श्री गुरु नानक साहिब जी ने ही रखी थी। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने भी यही आदर्श ख़ालसा के सामने रखा था। श्री गुरु नानक साहिब जी ने फरमान किया था :

जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ ॥
सिरु धरि तली गली मेरी आउ ॥

*भूतपूर्व अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर, फोन : ९९१५८-०५८००

इतु मारगि पैरु धरीजै ॥
सिरु दीजै काणि न कीजै ॥ (पन्ना १४१२)

इन सिंघों ने गुरु-मार्ग पर अपने शीश भेंट कर सिक्ख धर्म की अगंमी शूरवीरता और आत्म-बलिदान की इंकलाबी भावना को शिखर पर पहुँचा दिया। गुरमति में परमात्मा को पाने के लिए गुरु को अपना तन, मन, धन सौंपने का हुक्म है। श्री गुरु अमरदास जी ने फरमान किया है :

तनु मनु धनु सभु सउपि गुर कउ
हुकमि मंनिऐ पाईऐ ॥ (पन्ना ९१८)

शहादत इस भीतरी क्रिया का बाहरी रूप ही होता है। आत्म-बलिदान की भावना सिक्खी की ही देन है। श्री गुरु अरजन देव जी और श्री गुरु तेग बहादर जी ने आत्म-बलिदान देकर इस प्रथा का आधार बांधा। उनके नक्श-ए-कदमों पर चलते हुए अनगिनत सिंघों ने शहादत दी और अपने ख़ून से इस धरती से जुल्म व पाप को साफ़ किया। दशमेश पिता जी ने फरमान किया है :

याही काज धरा हम जनमं ॥
समझ लेहु साधू सभ मन मं ॥
धरम चलावन संत उबारन ॥
दुसट सभन को मूल उपारन ॥४३ ॥ ६ ॥
(बचित्र नाटक)

गुरु साहिब जी के इसी उद्देश्य को मुख्य रखते हुए श्री मुकतसर साहिब की धरती पर शहीद होने वाले सिंघों ने बहुत महान कार्य किया था। ये सिक्ख चाहे किसी समय गुरु जी का साथ छोड़ कर चले गए और बेदावा (सम्बन्ध-विच्छेद पत्र) लिख कर दे गए थे, मगर जब पुन: उन्होंने गुरु जी के चरणों में अपना शीश भेंट कर दिया, तब गुरु साहिब के दिल में उनके लिए असीम प्यार जाग उठा। वे जंगे-मैदान में आए और एक-एक सिंघ को गोद में लेकर प्यार किया। सभी सिंघ शहीद हो चुके थे। एक ही जत्थेदार भाई महां सिंघ की सांसें अभी चल रही थीं। गुरु साहिब ने जब भाई महां सिंघ का सिर गोद में लिया तो कुछ मांगने के लिए कहा। भाई महां सिंघ को गुरु जी का दर्शन हो चुका था। उसने और क्या मांगना था! उसने गुरु साहिब को बेदावा फाड़ देने की विनती की। सिक्ख के लिए गुरु की कृपा-प्रसन्नता पाना बहुत बड़ी दौलत है, जो सिर देकर भी मिलती हो, तो महँगी नहीं है, जैसे कि महावाक्य है :

तू चउ सजण मैडिआ डेई सिसु उतारि ॥
नैण महिंजे तरसदे कदि पसी दीदारु ॥
(पन्ना १०९४)

गुरमति के अनुसार सतिगुरु के समान दाता कोई नहीं, जो मानव को जीवन-दान और नाम-धन देकर मालामाल कर सकता है। सतिगुरु की सेवा सिक्ख इसीलिए करता है कि वह इस झूठ के संसार में से निकल कर

सत्य का रूप हो सके। जब सिक्ख नाम-सिमरन और सेवा कर अपना अहंकार खो देता है और गुरु-चरणों में अपने आप को न्यौछावर कर देता है, तो उसका साधना-पक्ष पूर्ण हो जाता है। इससे आगे गुरु का कार्य रह जाता है कि उस पर कृपा कर सत्य-मंडल का अधिकारी बना दे। ये सिक्ख चाहते तो जंग से डरते हुए आलोप हो सकते थे। इन्हें किसी मजबूरी वश जंग नहीं लड़ना पड़ी। इन्होंने गुरु की सेवा में धर्म-कार्य को मुख्य रख कर अपनी मर्ज़ी से शहादत दी थी। ये सिक्ख सिक्खी की परीक्षा में पूरी तरह से पास हो चुके थे। गुरु साहिब ने इन्हें मुक्ति और अमर पदवी प्रदान की। इनके मुक्ति-पद प्राप्त करने के कारण यह जगह बहुत पवित्र हो चुकी थी। गुरु साहिब ने इस जगह का नाम आप खुद 'मुकतसर' रखा और हुक्म किया कि इसे कोई 'खिदराणा' न बुलाए :

या ते नाम मुकतिसर होआ।
जो मजहि तिन ही अघ खोआ।
अस महिमा श्री मुख ते कही।
सो अबि प्रगट जगत मै सही।

तथा :

अब ते नाम मुकतिसर होइ।
खिदराणा इस कहे न कोइ।
इस थान मुकति होइ चाली।
जो निशपाप घाल बहु घाली।

सिक्ख इतिहास में इस स्थान का बड़ा ऐतिहासिक और आध्यात्मिक महत्व है। ४० मुकतों की याद सिक्खी आस्था की प्रेरणा का बड़ा स्रोत है। इस स्थान का स्पर्श पाकर माया के बंधन टूटते हैं और तन-मन निर्मल होता है। शहीदों का स्थान कितना आदरणीय होता है, इस बारे में एक शायर ने लिखा है :

शहीदों की कत्लगाह से,
क्या बेहतर है काअबा?
शहीदों की खाक पे तो,
खुदा भी कुर्बान होता है।

स्त्री वर्ग का गुरमति में बहुत सम्मान किया गया है। श्री गुरु नानक साहिब जी ने स्त्री को मंदा (नीच) समझने की मनाही की है और इसे राजाओं की जननी कह कर उपमा की है। सिक्ख धर्म में स्त्री और पुरुष का एक समान दर्जा है। परंपरागत भारतीय दर्शन में स्त्री को समानता का हक नहीं दिया गया था। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने ख़ालसे की जत्थेबंदी में स्त्रियों का सम्मान किया है। माता साहिब कौर जी को ख़ालसे की माता होने की उपाधि दी है। श्री मुकतसर साहिब में सिंघों को प्रेरित कर लाने वाली भी एक स्त्री थी— माता भागो जी। माता भागो जी को जब उपरोक्त सिंघों द्वारा बेदावा लिख कर चले आने का पता चला तो उन्होंने उन्हें समझाया कि इस लोक-परलोक में गुरु के बिना कोई सहारा

नहीं है। यह शरीर तो नश्वर है, इसे कब तक बचाते रहोगे? माता भागो जी सिंघों को गुरु के सम्मुख करने के लिए उन्हें लेकर आए थे। माता जी जंग में सिंघों के साथ ही रहे और शत्रु के विरुद्ध युद्ध में हिस्सा लिया। बाद में ये सदा के लिए गुरु-सेवा में ही रहे और दक्षिण की तरफ गुरु जी के साथ गए। गुरु जी के बाद आस-पास के गाँवों में सिक्खी-प्रचार करते रहे। माता भागो जी का यह किरदार तत्कालीन भारतीय संस्कृति के विपरीत एक बहुत बड़ी क्रांति का शिखर था। स्त्री को उस समय निर्बल जान कर पैर की जूती समझा जाता था। गुरमति के प्रचार ने स्त्री को शक्ति और पुरुषों के साथ समानता प्रदान कर समाज में उसका सम्माननीय स्थान बनाया।

श्री मुकतसर साहिब की धरती इस पक्ष से भी महत्वपूर्ण है कि यहाँ सिक्खों की गुरु के साथ टूटी जुड़ गई थी। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने इन सिक्खों के श्री अनंदपुर साहिब में दिए बेदावे को फाड़ कर उन्हें फिर अपना सिक्ख स्वीकार कर गले से लगाया। यह गुरु का बढ़प्पन है कि जो सिक्ख गलती भी करता है, वह गुरु की शरण में आ जाये, तो गुरु उसे क्षमा कर देता है :

जो सरणि आवै तिसु कंठि लावै
इहु बिरदु सुआमी संदा॥ *(पन्ना ५४४)*

गुरु की शरण में आने के कारण इन सिंघों का परमात्मा के साथ भी मिलाप हुआ और इनकी टूटी जड़ गई। यह आध्यात्मिक तौर पर इस बात का प्रमाण है कि यदि कोई जीव गुरु को अपना आप अर्पण कर देता है, तो गुरु उसी पल उसे प्रभु के साथ मिला देते हैं। जीव रूपी कमल का फूल मोह-ममता के कीचड़ में फंसा है। गुरु ही ऐसा मित्र है, जो मोह-ममता से जीव की गाँठ खोल कर उसे परमात्मा के दर का ज्ञान करवा सकता है, जिस प्रकार बादल की वर्षा कमल की मिट्टी धो देती है और वह खिल उठता है :

पंकज फाथे पंक महा मद गुंफिआ॥
अंग संग उरझाइ बिसरते सुंफिआ॥
है कोऊ ऐसा मीतु जि तोरै बिखम गांठि॥
नानक इकु स्रीधर नाथु जि टूटे लेइ सांठि॥

(पन्ना १३६२)

इस प्रकार यह जंग केवल दुनियावी घटना ही नहीं थी, इसका आध्यात्मिक महत्व भी था। सांसारिक स्तर पर ये शहीद सिक्खी आस्था दृढ़ करवा रहे थे। दैवी स्तर पर ये अहं की दीवार तोड़ कर, सच्चा बन कर परमात्मा के घर में प्रवेश कर रहे थे।

अकाल पुरख की शक्ति के कारण ही थोड़ी संख्या में होने के बावजूद भी सिक्खों ने बड़ी संख्या में आई फ़ौज के विरुद्ध युद्ध किया। उन्होंने जान की परवाह न करते हुए सीना तान कर जंग लड़ी। दुनिया के इतने

महान युद्ध हुए हैं, रामायण-महाभारत से लेकर दोनों विश्व-युद्ध और भारत-पाकिस्तान की जंगों तक, ये युद्ध बराबर की फौज के बीच हुए थे जब फौजें बराबर की हों तो सिपाहियों को जान का इतना ख़तरा नहीं होता। वे हिम्मत के साथ लड़ते हैं, परन्तु जब एक तरफ़ ४० आदमी हों और दूसरी तरफ़ भारी तादाद में सेना हो, उस समय साहस के साथ कोई विरला ही लड़ सकता है। चमकौर साहिब की जंग और श्री मुकतसर साहिब की जंग ऐसी ही असमतोल जंगें थीं। इनमें सिक्खों के मुकाबले दुश्मनों की संख्या बहुत ज्यादा थी। फिर भी ख़ालसा ने जिस हिम्मत और साबित-कदमी के साथ दुश्मन को धूल चटाई उसकी मिसाल दुनिया भर के इतिहास में नहीं मिलती।

इस जंग में सिंघों ने मृत्यु का भय उतार कर जितने भी श्वास उन्हें मिले, तेग के कौशल दिखाए। उन्होंने शत्रु को जीतने की और उसे ख़त्म करने की सफल कोशिश की। उनकी यह भावना आखिरी दम तक कायम रही। चाहे वे शहीद हो गए, परन्तु उनके मन में 'वाहिगुरू जी का खालसा, वाहिगुरू जी की फतह' की ध्वनि गूँज रही थी। वे शहीद होकर भी विजेता थे, क्योंकि वे पूर्ण खालसा— परमात्मा का रूप बन चुके थे। उन्होंने मौत को भी जीत लिया था। वे अमर होकर मुक्त-मंडल के निवासी हो गए थे। वाहिगुरु जी की शाश्वत फतह उनके अंग-संग थी।

ऐसी विलक्षण और आलौकिक विरासत की मालिक सिक्ख कौम में आज आचार, व्यवहार, संयम एवं सांस्कृतिक स्तर पर आ रहा पतन अति चिंता का विषय है। आज ज़रूरत है कि हम अपने अंदर नज़र मारें, अपनी महान विरासत से अवगत हों और गुरमति सिद्धांतों से दिशा लेकर खालसाई रूप में विचरें! इस महान कार्य के लिए समूह सिक्ख संस्थाओं, संप्रदायों, सिक्ख बुद्धिजीवियों, महापुरुषों और ख़ास कर माँ-बाप को योजनाबद्ध तरीके से प्रयास करना होगा। आओ! आज महान ४० मुकतों को पूरे श्रद्धा-सम्मान के साथ शीश झुकाएं और सतिगुरु के बताए मार्ग पर चलने का प्रण करें!

खत्रीआ त धरमु छोडिआ

*-स. किरपाल सिंघ **

श्री गुरु नानक साहिब के आगमन (सन् १४६९ ई.) के समय हिंदुस्तान विदेशी मुस्लिम राजशाही का ग़ुलाम था। दूसरे शब्दों में, इस देश की ग़ुलामी की तवारीख तकरीबन तीन सौ वर्ष से अधिक पुरानी थी, जो अभी जारी थी। इतने लंबे अरसे के दरमियान कई मुस्लिम हकूमतें आईं व गईं और उन्होंने जो ज़ुल्म हिंदुस्तानियों पर ढाये, उन्हें शब्दों में बयान करना कठिन है। उस समय के दौरान कई ऐसे खूँखार मुस्लिम हमलावर भी आए जिन्होंने यहाँ की प्रजा की खूब धन-दौलत लूटी और इज्जत-आबरू को भी मिट्टी में रोला। उनके हमलों का एक दिलचस्प पहलू यह भी है कि उन्होंने यहाँ के नये बने हम-धर्मी (मुसलमान) लोगों के साथ भी वही सलूक किया जो उन्होंने हिंदुओं के साथ किया था। तब हिंदुस्तान के राजा-महाराजा अपनी धन-दौलत और बेटियों की डोलियां उनके सुपुर्द कर अपनी जानबचा लेते रहे। ऐसी घटनाओं से हिंदुस्तान का इतिहास भरा पड़ा है।

मुस्लिम लुटेरों की आँधी अफगानिस्तान की तरफ से चढ़ती हुई बंगाल की खाड़ी पर जाकर रुकती और रास्ते में जो भी कुछ मिलता, उसे समेट कर वापस लौटती और अपने पीछे छोड़ जाती उजड़े शहर, खंडहर गाँव, लाशों के ढेर, ढह-ढेरी हुए धर्म-स्थानों में से उड़ते धुएं के ग़ुब्बार और भयानक महामारी का दौर। आश्चर्य की बात तो यह है कि किसी एक भी हिंदुस्तानी ने अपने हम-वतनों को इन विदेशी हमलावरों के ख़िलाफ़ राष्ट्रीय स्तर पर लामबंद नहीं किया। यहाँ हम एक विदेशी हमलावर की बाबत संक्षिप्त जानकारी देते हैं।

मंगोल हमलावर चंगेज ख़ान के बाद हिंदुस्तान में सबसे अधिक तबाही मचाने वाला 'तिमूर' या 'तैमूर' को माना जाता है। वह लंगड़ा था, इस लिए उसे 'तैमूर लंग' भी कहा जाता है। उसने अफगानिस्तान में बड़ी संख्या में जिहाद के नाम पर गाजी इकठ्ठा किये और एलान किया कि वह हिंदुस्तान में काफ़िरों को ख़त्म करने जा रहा है और ऐसा करने से वह इस्लामिक जिहादियों को उनकी जायदाद, धन-दौलत लूटने एवं हासिल करने का रास्ता साफ कर रहा था। उपरोक्त बात अंग्रेज़ इतिहासकार इलियट और डउसन ने पुस्तक 'तुज़के-तिमूरी' में ३८७-४७७ पृष्ठ पर लिखी है। तैमूर लंग ने २१ सितम्बर,

**पूर्व रिसर्च स्कालर, सिक्ख इतिहास रिसर्च बोर्ड, शि. गु. प्र. कमेटी, श्री अमृतसर, फोन : ९८५५०-३५३५५*

१३९८ को भारी लाम-लश्कर के साथ सिंध दरिया पार किया और तेज़ी से उच्च, दीपालपुर और मुलतान पर कब्ज़ा कर लिया। इन तीनों स्थानों पर उसने भारी लूटमार की, कत्ल-ओ-गारत की, ताकि उसकी दहशतगर्दी का संदेश दूर-दूर तक फैल जाये। जब वह जेहलम और चनाब दरिया पार करता हुआ आगे बढ़ा तब शहर तलमी के मोहतबर हिंदुओं और मुसलमानों ने मिल कर उसे इसलिए कीमती नज़राने भेंट किये कि वह कत्ल-ओ-गारत न करे। तैमूर लंग ने सब कुछ रख लिया, परंतु लूटमार और कत्ल-ओ-गारत फिर भी जारी रखी और भारी तबाही मचायी। उस समय केवल कुछ घर सैयद मुसलमानों के ही बचे थे।

इसके बाद उसने ब्यास दरिया के निकट जसरथ खोखर नामक एक राजपूत को मार भगाया और समाणा की तरफ रुख किया। तैमूर लंग की खूँखार फौज को आगे बढ़ता देख दीपालपुर और पाकपटन के नागरिकों ने भटनेर के किलानुमा शहर में पनाह ली, जो एक हिंदू राजपूत सरदार के तहत था। तैमूर लंग की फौज ने उस पर ७ नवंबर, १३९८ को हमला किया और उसे तहस-नहस कर दिया। तैमूर लंग उसकी तबाही की तस्वीर बड़े फ़ख्र के साथ इस तरह बयान करता हुआ लिखता है— '' कुछ घंटों में ही दस हज़ार हिंदुओं के सिर कलम कर दिए गए। इस्लाम की तलवार ने उनके ख़ून में खूब स्नान किया। सारी धन-दौलत, कीमती सामान और सारा वो अनाज भी लूट लिया जो एक वर्ष के लिए संभाल कर रखा हुआ था। फौज ने सभी घर जला कर राख कर दिए और किले को गिरा दिया। ''

इसके बाद वह ९२, ००० की बड़ी संख्या वाली फ़ौज के साथ दिल्ली की तरफ बढ़ा और रास्ते में पड़ते शहरों— फतेहाबाद, कैथल, समाणा, पानीपत आदि को तबाह किया और कत्ल-ओ-गारत की। यहाँ के बड़ी संख्या में लोगों ने डर कर दिल्ली में पनाह ले ली। तैमूर लंग ने ११ दिसंबर, १३९८ ई. को दिल्ली के जहांपनाह शाही महल पर कब्ज़ा कर लिया। दिल्ली का लाल किला इससे तकरीबन दो सौ वर्ष के बाद मुग़ल बादशाह शाहजहान ने बनवाया था। दिल्ली में सुलतान मुहम्मद तुगलक की फौज ने इकबाल खान मालू के नेतृत्व में कुछ समय तक मुकाबला किया, परन्तु वह मैदान छोड़ कर भाग गई। तैमूर लंग की फौज ने भारी तबाही मचायी और लगभग एक लाख हिंदुयों को बंदी बना लिया। कई इतिहासकार उनकी संख्या पचास हज़ार ही लिखते हैं। तैमूर ख़ुद लिखता है कि उन सभी को मौत के घाट उतार दिया गया।

इसी प्रसंग में वह लिखता है कि उसके हुक्म की पालना करते हुए एक मौलाना नसीरुद्दीन उमर, जो एक मुस्लिम विद्वान था और जिसने कभी कोई चिड़िया भी नहीं मारी थी, तब

उसने पचास मूर्ति-पूजक हिंदू काफ़िरों को मारा था।

उस समय वे शरणार्थी हिंदू, जो अपनी जान बचाने के लिए दिल्ली में इकठ्ठा हो गए थे, उन्होंने तैमूर की फौज का कुछ समय तक मुकाबला किया, परन्तु हार गए। तैमूर लंग लिखता है कि तब उसकी फ़ौज के प्रत्येक जवान ने पचास से लेकर एक सौ हिंदू पुरुष, स्त्रियां और बच्चे अपने कब्ज़े में ले लिए थे। सोने-चाँदी और अशरफियों के ढेर लग गए थे और उस दौलत को गिनना मुश्किल था। २७-३० दिसंबर, १३९८ ई. के चार दिनों में ही सारी दिल्ली तबाह कर दी गई। उसने ३१ दिसंबर, १३९८ ई. को वहाँ से शिवालिक पहाड़ियों की तलहटी के रास्ते वापसी की और रास्ते में नगरकोट, जम्मू, मेरठ, हरिद्वार आदि शहरों को लूटता एवं तबाह करता हुआ सिंध दरिया को पार कर अपने देश (अफगानिस्तान) लौट गया।

यहाँ हमने विदेशी हमले का जो मंजर पेश किया है वह मात्र यही सिद्ध करने के लिए काफ़ी है कि उत्तरी हिंदुस्तान और ख़ास कर पंजाब के विशाल क्षेत्र पर पिछले तीन सौ वर्ष के विदेशी हमलों के दौरान यहाँ के निवासियों की क्या दुर्दशा हुई होगी और उन्होंने किस तरह अपने आपको उस हालात के मुताबिक ढाला होगा। इतिहासकारों के अनुसार मुस्लिम शासक बहलोल लोधी (सन् १४५१-८९) और सिकंदर लोधी (सन् १४८९-१५१७) के समय के दौरान हालात कुछ सुधरे थे, परन्तु श्री गुरु नानक साहिब जी के आगमन (सन् १४६९) तक लोक तैमूर लंग की दहशत भूले नहीं थे, क्योंकि उन्होंने अपने पूर्वजों से उसकी तबाही की कहानियाँ ज़रूर सुनी होंगी। श्री गुरु नानक साहिब के समय मुगलों, तुर्क-बाशा आदि विदेशी कौमों के हमले जारी थे। इन मुसीबत भरे वर्षों के दौरान हिंदुस्तानियों के शारीरिक ज़ख़्म और धन-दौलत के नुकसान के खोल तो भर गए होंगे, परन्तु जो नुकसान उनकी विचारधारा व सभ्यता का हुआ वह तो अभी भी दिखाई देता था।

प्रत्येक विदेशी हमलावर ने अपने देश की तहज़ीब या संस्कृति, भाषा और धर्म थोपने की बहुत कोशिश की और यहाँ के लोगों, धर्म एवं संस्कारों की खूब निंदा की। (यहाँ यह बताना बहुत ज़रूरी है कि दास (लेखक) प्रत्येक ग़ैर-हिंदुस्तानी शासक, जिसने यहाँ रह कर शासन किया या हमले किये, चाहे वे सुलतान, मुग़ल या अंग्रेज़ हुए हैं, को हमलावर और लुटेरे मानता है।) मुग़ल हमलावर बाबर अपनी आत्म-कथा में लिखता है कि यहाँ के निवासियों की चेहरे सुंदर नहीं है, सामाजिक तानाबाना ख़राब है, कोई एक भी अक्लमंद नहीं लगता, रोजगार नहीं है, अच्छी नस्ल के घोड़े नहीं हैं, न ही कुत्ते अच्छी नस्ल के मिलते हैं, अंगूर और खरबूज़े भी अच्छी किस्म के नहीं और न ही अच्छा रोटी-

पानी मिलता है। यहाँ न कोई विद्यालय है, न कोई गर्म पानी वाले स्नान-घर और न ही कहीं अच्छे बाज़ार हैं। क्योंकि वो एक विजेता था इसलिए उसने हिंदुस्तान की हर चीज़ की निंदा की होगी। फिर सवाल यह पैदा होता है कि फिर वो यहाँ क्या लेने आया था ?

जो तबाही मुस्लिम हमलावर बाबर ने मचायी उस संबंध में श्री गुरु नानक साहिब के अलावा किसी दूसरे समकालीन शख्स ने एक शब्द भी नहीं लिखा। यह श्री गुरु नानक साहिब की ही कलम थी जिसने बाबर को हमलावर तथा पापी कहा और फरमान किया— *''खुरासान खसमाना कीआ हिंदुसतानु डराइआ॥''* इस सारी बाणी को श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब में हू-ब-हू दर्ज किया।

सन् १५१८ के आस-पास बाबर ने अफगान मुस्लिम कबीलों को हिंदुस्तान लूटने के लिए इकट्ठा किया और अगले वर्ष बजौर के किले पर कब्ज़ा कर लिया। इस बाबत वह अपनी आत्म-कथा 'बाबर नामा' (जिसका एक अंग्रेज़ इतिहासकार महिला मिसेज बीवरेज ने अंग्रेज़ी में अनुवाद किया) में लिखता है कि उसने वहाँ कत्ल-ए-आम का हुक्म दे दिया। क्या ख़ूब नज़ारा था कि आस-पास, गली-मुहल्लों और घरों में काफ़िरों की लाशों के ढेर लगे दिखाई देते थे। यह कत्ल-ए-आम हिंदुस्तान पर हमले की एक झलक ही था और बहुत कुछ, जो उसके दिमाग़ में जमा था, उस विषय में वह ख़ुद लिखता है कि उसने पाँच बार ग़ाज़ी की फ़ौज का नेतृत्व सात या आठ वर्ष किया। पाँचवी बार उसके एक ही हमले ने सुलतान इब्राहिम जैसे दुश्मन को सर कर हिंद की विशाल हुकूमत पर कब्ज़ा कर लिया था।

अफ़सोस! जब हिंदुस्तान का इतिहास अंग्रेज़ी हुकूमत के समय दोबारा लिखा गया, तब भी हिंदुस्तान ग़ुलाम था और इसके देसी और विदेशी इतिहासकार समकालीन हुकूमत के स्थापित कानूनों के दायरे में रह कर ही लिखते रहे, जिस कारण हम उन सभी की लिखतों में मुगलों, अंग्रेज़ों और दूसरे हमलावरों की तारीफों की दास्तान पढ़ते हैं और उनकी रचनाओं में ग़ुलामी की मानसिकता भरी हुई है। कोई हमलावरों को 'महान मुग़ल' लिखता है और कोई 'महान अकबर' और 'सबसे अक्लमंद शासक शेरशाह सूरी' और 'सबसे स्थिर हुकूमत देने वाला मुग़ल बादशाह औरंगजेब', 'सबसे अधिक न्याय-प्रस्त जहाँगीर' आदि।

श्री गुरु नानक साहिब जी को धार्मिक पुरुष होते हुए उन्हें पक्के मानवता-प्रस्त भी कहा जा सकता है, क्योंकि बाबर के हमले के समय हिंदुस्तान में केवल उन्होंने ही हर तरफ से दबी-कुचली और दुखी हिंदुस्तान की जनता के हक में 'हा' का नारा मारते हुए फरमान किया था— *''खुरासान खसमाना कीआ हिंदुसतानु*

डराइआ॥'' उनकी बाणी में से इस प्रकार के कई हवाले मिलते हैं।

उपरोक्त लिखतों से हम इस बात का सहज ही अंदाज़ा लगा सकते हैं कि श्री गुरु नानक साहिब के समय मुगल शासक हिंदुस्तान की जनता और ख़ास कर हिंदुओं पर अपने रीति-रिवाज़, सामाजिक एवं धार्मिक विचारधारा किस तरह ठोस रहे थे। हिंदुओं का धर्म, संस्कृति, जान-माल पिछले तीन सौ वर्ष से मुस्लिम शासकों के रहम-ओ-कर्म पर ही निर्भर था। उस समय तुर्कों और अफगानों में हिंदुस्तान को लूटने और वहाँ अपना राज-भाग स्थापित करने की राजनीतिक भाग-दौड़ लगी हुई थी। वे दोनों कौमें मुसलमान थीं, इसलिए उन दोनों कौमों के नेता अपने-अपने क्षेत्र में हिंदुस्तान के ख़िलाफ़ जिहाद का नारा लगा कर हज़ारों जिहादी इकठ्ठा कर लेते और हिंदुस्तान में से काफ़िरों को ख़त्म करने के लिए बढ़िया से बढ़िया हथियार लेकर इधर कूच करते। इसी सोच और तथ्य के अंतर्गत एक तरफ़ वे हिंदुओं को कत्ल करते और दूसरी तरफ़ खूब लूट-मार भी करते। इसके अलावा कई बार वे मुस्लिम शासकों को भी इसी बहाने मारते कि वे हिंदू-प्रस्त या उनके प्रति नरम थे। दोनों हालत में शामत हिंदुओं की ही आती थी। ऐसी हालत में हिंदुओं ने चुप-चाप और बिना किसी विरोध के अपने आप को भी नये माहौल में गुज़ारा करने के मुताबिक ढाल लिया था। वे मुस्लिम धर्म, उसकी सामाजिक रस्म-रीतियां और भाषा अपनाने लगे थे।

बाबर के हमले के समय श्री गुरु नानक साहिब ने प्रजा के लिए केवल 'हा' का नारा ही नहीं मारा, बल्कि बाबर को एक खूँखार, ज़ालिम और लुटेरा भी कहा। जब हम श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज तिलंग राग में यह शबद पढ़ते हैं— *''जैसी मै आवै खसम की बाणी तैसड़ा करी गिआनु वे लालो॥ पाप की जञ लै काबलहु धाइआ जोरी मंगै दानु वे लालो॥''* तब श्री गुरु नानक साहिब फरमान करते हैं कि जिस प्रकार की बाणी का संदेश उन्हें परमात्मा की तरफ से हुआ है उसे उसी तरह वे आपके सामने रख रहे हैं। ग़फलत की नींद में सोए हिंदुस्तानी लोगों को जगाने वाली बाणी का उच्चाण आज़ाद और बेख़ौफ़ मानसिकता की देन है। इसी तथ्य को पहचानते हुए अलामा इकबाल, एक कट्टर मुसलमान लेखक होते हुए भी श्री गुरु नानक साहिब के बारे में लिख गए— *''फिर उठी आख़िर सदा तौहीद की पंजाब से। हिंद को एक मर्द-ए-कामिल ने जगाया ख़्वाब से।''*

जिन प्रेम कीओ तिन ही प्रभ पाइओ

*-डॉ. परमजीत कौर**

परमात्मा का आश्रय मनुष्य को आत्मनिर्भर बना देता है तथा भ्रम, भ्रान्ति एवं असत्य के रास्ते से हटाकर सत्य व आत्मिक आनन्द से पूर्ण जीवन-मार्ग पर चलने के लिये प्रेरित करता है। प्रेम के सामीप्य को अनुभव करने वाले के जीवन में चिन्ता तथा तनाव के स्थान पर आनन्द एवं उल्लास बना रहता है। केवल धार्मिक पुस्तकों के रटन-मात्र, तीर्थ-स्नान करने या खोखले कर्मकाण्ड करते हुए किसी विशेष वेशभूषा को धारण करने से प्रभु का प्रेम व सामीप्य प्राप्त नहीं किया जा सकता। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपनी बाणी में जीवों को एक अकाल पुरख की आराधना करने की ताकीद करते हुए कर्मकाण्ड तथा पाखण्ड का विरोध किया है। गुरु साहिब का कथन है कि यदि कोई मनुष्य दोनों नेत्र बंद करके बैठा रहता है तथा उसने बगुले वाली समाधि लगाई हुई है तो इसका कोई लाभ नहीं है। यदि कोई मनुष्य सात समुद्रों तक सारे तीर्थों पर केवल भ्रमण तथा स्नान करता फिरता है तो उसने इस लोक अर्थात् मौजूदा जीवन का सुख गंवा लिया है, परलोक भी गंवा लिया है, क्योंकि उसने प्रभु का सिमरन नहीं किया। यही नहीं, जिसने बगुल-समाधि, तीर्थ-स्नान आदि कर्मकाण्ड त्याग कर केवल विकार-ग्रस्त जीवन व्यतीत किया है उसने भी सारी आयु व्यर्थ व्यतीत कर ली है। हे भाई ! सारे ध्यान से सुन लो, सत्य तो यह है कि उस मनुष्य ने ही परमात्मा का सामीप्य प्राप्त किया है जिसने खालक तथा खलकत से प्रेम किया है अर्थात् परमात्मा के जीवों से प्रेम किया है :

कहा भयो जो दोऊ लोचन मूंद कै
बैठि रहिओ बक धिआन लगाइओ ॥
न्हात फिरिओ लीए सात समुद्रनि
लोक गयो परलोक गवाइओ ॥
बास कीओ बिखिआन सों बैठ कै
ऐसे ही ऐसे सु बैस बिताइओ ॥
साचु कहों सुन लेहु सभै
जिन प्रेम कीओ तिन ही प्रभ पाइओ ॥९ ॥२९ ॥
(अकाल उसतत)

हृदय में प्रभु-प्रेम न हो तो भक्ति नहीं की जा सकती :

— बिनु पिआरै भगति न होवई
ना सुखु होइ सरीरि ॥ *(पन्ना ४२९)*

**६२०, गली नं. १, छोटी लाईन, संतपुरा, यमुनानगर (हरियाणा)— १३५००१, फोन : ९८१२३-५८१८६*

— प्रेम प्रीति भाइ भगती पाईऐ
सतिगुरि बूझ बुझाई ॥ (पन्ना २४५)

परमात्मा के साथ प्रेम तभी बनता है जब केवल परमात्मा को ही हृदय में बसाया जाए, किसी दूसरे आश्रय का विचार न किया जाए। इसके साथ ही मन में से शरीर के मोह का त्याग करना पड़ता है। जब तक मन नाशवान शरीर के साथ एकरूप रहता है तब तक इसकी प्रीति न तो माया से टूटती है और न ही प्रभु के साथ जुड़ती है :

जोड़ी जुड़ै न तोड़ी तूटै
जब लगु होइ बिनासी ॥
का को ठाकुरु का को सेवकु
को काहू कै जासी ॥ (पन्ना ३३४)

मन को परमात्मा के साथ जोड़ने के लिए माया का मोह, माया के स्वाद छोड़ने पड़ते हैं :

प्रीति बिना कैसे बधै सनेहु ॥
जब लगु रसु तब लगु नही नेहु ॥ (पन्ना ३२८)

लेकिन यह समझ, यह प्रेम गुरु द्वारा ही प्राप्त होता है। हमारे लिए गुरबाणी ही गुरु है।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने १७०८ ई. में पंचतत्व में विलीन होने से पूर्व श्री गुरु ग्रंथ साहिब को युगो-युग अटल गुरु की पदवी प्रदान की तथा गुरु के सिक्खों से कहा कि यदि कोई सिक्ख मेरे साथ वार्तालाप करना चाहे तो गुरु-शबद का चिंतन करके कर सकता है। गुरबाणी के साथ प्रेम करना गुरु के साथ प्रेम करना है। जब तक हृदय में गुरबाणी के लिए प्रेम-सत्कार पैदा नहीं होता तब तक मनुष्य गुरबाणी में प्रतिपादित सिद्धांतों के अनुसार अपना जीवन नहीं बना सकता। गुरबाणी को पूर्ण सत्य समझना तथा उस पर पूर्ण रूप से भरोसा करना ही गुरु के साथ प्रेम करना है। गुरु साहिब का आदेश है :

सतिगुर की बाणी सति सति करि जाणहु
गुरसिखहु हरि करता आपि मुहहु कढाए ॥
(पन्ना ३०८)

श्री गुरु नानक देव जी समझा रहे हैं कि हे भाई ! सतिगुरु की बाणी में पूर्ण श्रद्धा रखो। इस तरह सर्वव्यापक परमात्मा में लीन हो सकते हैं :

सतिगुर की बाणी सति सति करि मानहु
इउ आतम रामै लीना हे ॥ (पन्ना १०२८)

जिसकी प्रीति गुरबाणी के साथ बन जाती है उसको सारी सृष्टि में प्रभु की पवित्र ज्योति व्यापक दिखाई देती है :

अंतरि प्रेमु परापति दरसनु ॥
गुरबाणी सिउ प्रीति सु परसनु ॥
अहिनिसि निरमल जोति सबाई
घटि दीपकु गुरमुखि जाता हे ॥ (पन्ना १०३२)

जिसे गुरु पर भरोसा होता है वह सदा गुरु के उपदेश को सुनता है, नित्य नाम जपते हुए गुरु-शबद के अनुसार जीवन बनाने का यत्न करता है तथा शुभ गुणों को धारण कर प्रभु-

प्रेम की प्राप्ति के मार्ग पर चल पड़ता है :

— सतिगुर की जिस नो मति आवै
सो सतिगुर माहि समाना ॥
इह बाणी जो जीअहु जाणै
तिसु अंतरि रवै हरि नामा ॥ (पन्ना ७९७)
— गुणवंती सचु पाइआ त्रिसना तजि विकार ॥
गुर सबदी मनु रंगिआ रसना प्रेम पिआरि ॥
बिनु सतिगुर किनै न पाइओ
करि वेखहु मनि वीचारि ॥
मनमुख मैलु न उतरै
जिचरु गुर सबदि न करे पिआरु ॥ (पन्ना ३६)

गुरु पर पूर्ण भरोसा हो जाने से यह समझ आ जाती है कि परमात्मा के बिना अन्य कोई मारने या जीवित रखने वाला नहीं है। सारे जीवों का रक्षक वही है, इसलिए चिन्ता छोड़कर हर समय उसका नाम जपना चाहिए :

मारै न राखै अवरु न कोइ ॥
सरब जीआ का राखा सोइ ॥
काहे सोच करहि रे प्राणी ॥
जपि नानक प्रभ अलख विडाणी ॥
(पन्ना २८६)

जिस जीव को प्रभु प्रेम हो जाता है वह सदा प्रभु के नाम-सिमरन की कमाई करता है, दूसरों को भी सिमरन करने के लिए प्रेरित करता है, स्वयं सदा प्रभु के गुण गाता है तथा दूसरों को गुरबाणी सुनाता है। यही गुरु द्वारा बतायी गयी ऊंची तथा उत्तम सीढ़ी है, जिसके द्वारा मनुष्य उच्च आत्मिक मण्डल में जुड़कर प्रभु से जा मिलता है :

गुरमुखि सचु बैणी गुरमुखि सचु नैणी ॥
गुरमुखि सचु कमावै करणी ॥
सद ही सचु कहै दिनु राती
अवरा सचु कहाइदा ॥५ ॥
गुरमुखि सची ऊतम बाणी ॥
गुरमुखि सचो सचु वखाणी ॥
गुरमुखि सद सेवहि सचो सचा
गुरमुखि सबदु सुणाइदा ॥ (पन्ना १०५८)

परमात्मा तथा जीवों के मध्य के अन्तर को दूर करने का एक ही उपाय है— परमात्मा को हरदम याद करना। परमात्मा सदाचित्त, आनन्द-स्वरूप है, प्रेम-स्वरूप है। जीव परमात्मा का ही अंश है। झूठ, छल, कपट, सदाचार का अभाव ही परमात्मा तथा जीवों के मध्य की दूरी का कारण है :

— सचै दै दीबाणि कूड़ि न जाईऐ ॥
झूठो झूठु वखाणि सु महलु खुआईऐ ॥
(पन्ना १४६)
— बोलहु साचु पछाणहु अंदरि ॥
दूरि नाही देखहु करि नंदरि ॥ (पन्ना १०२६)

जब मनुष्य गुरमति के अनुसार चलता हुआ, सत्य के समीप होने का यत्न करता है, असत्य को जिंदगी में से बाहर निकालना आरम्भ कर देता है, तब उसकी लगन परमात्मा के नाम के साथ लग जाती है। बार-

बार प्रभु को याद करने से प्रभु से प्रेम हो जाता है। प्रभु की ताकत, प्रभु के गुण धीरे-धीरे प्रेम करने वाले के अंदर प्रवेश करने लगते हैं। वह सत्य, संतोष का धारक बन जाता है। प्रभु-प्रेम में जुड़े हुए मनुष्य को दुनिया के रस गलत जीवन-मार्ग पर नहीं ले जाते। वह केवल वही कार्य करता है जिनसे उसका सम्बंध प्रभु के साथ बना रहता है। वह दुरमति का त्याग कर देता है, क्योंकि उसके मन तथा तन में परमात्मा का ही नाम बसता है। उसका मन सदा निर्मल तथा शान्त रहता है :

कामु क्रोधु न लोभु बिआपै
जो जन प्रभ सिउ रातिआ ॥
एकु जानहि एकु मानहि राम कै रंगि मातिआ ॥
(पन्ना ५४३)

परमात्मा से प्रेम करने वाला परमात्मा की याद के बिना नहीं रह सकता। जैसे जल के बिना मीन मर जाती है वैसे ही प्रभु के नाम-सिमरन के बिना वह आत्मिक मौत आ गयी समझता है। श्री गुरु नानक देव जी समझाते हैं कि प्रभु के साथ ऐसा प्रेम करो जैसा पानी का कमल के फूल के साथ, मछली का जल के साथ, पपीहे का स्वाति नक्षत्र की बूंद के साथ, चकवी का सूर्य के साथ तथा जल का दूध के साथ होता है। जैसे पानी दूध में मिलकर अपना स्वत्व त्याग देता है, उसका रूप दूध जैसा हो जाता है। उसका अपना कोई अलग अस्तित्व नहीं रह जाता, वह स्वयं को पूरी तरह से दूध में मिला देता है, इसी तरह जीव को परमात्मा से प्रेम कर यह समझना चाहिए कि प्रभु से अलग उसकी कोई पहचान नहीं है। उसका कुछ भी अपना नहीं है। मन-तन सब प्रभु का ही है। यह प्रकृति का नियम है कि जो जिसके प्रेम में रंग जाता है वह उसके जैसा ही हो जाता है :

जिसु सिउ राता तैसो होवै
सचे सचि समाइआ ॥ *(पन्ना ६५)*

प्रभु का प्रेम सांसारिक धन-दौलत, पदार्थों के बदले नहीं मिलता। इसकी प्राप्ति के लिए अपना मन अर्पण करना पड़ता है :

प्रभ संगि मिलीजै इहु मनु दीजै ॥ (पन्ना ४०८)

प्रभु मन लेकर प्रेम का रंग लगा देता है। प्रभु-प्रेम का रंग चढ़ जाये तो कोई अन्य वस्तु प्रिय नहीं लगती। जीव किसी कर्म-धर्म का मोहताज नहीं रहता :

सजणु मैडा रंगुला रंगु लाए मनु लेइ ॥
जिउ माजीठै कपड़े रंगे भी पाहेहि ॥
नानक रंगु न उतरै बिआ न लगै केह ॥
(पन्ना ६४४)

प्रभु-प्रेम में रंग हुआ मनुष्य परमात्मा को छोड़कर किसी अन्य आश्रय की चाह नहीं रखता :

एका खोजै एक प्रीति ॥
दरसन परसन हीत चीति ॥ *(पन्ना ११८०)*

वह सदा परमात्मा की भक्ति में लीन रहता है तथा प्रत्येक स्थान पर प्रभु को ही बसता हुआ देखता है। उसके लिए कोई मित्र नहीं होता, कोई शत्रु नहीं होता। वो भाई घन्हईआ जी जैसी समदृष्टि वाला हो जाता है :

अंतरि पूजा मन ते होइ ॥
एको वेखै अउरु न कोइ ॥ (पन्ना ११७३)

दुनिया की समस्त प्रीतियों में सबसे श्रेष्ठ प्रीति परमात्मा की प्रीति है। प्रभु-प्रेम द्वारा ही परमात्मा को प्राप्त किया जा सकता है। अन्य कोई प्रयास परमात्मा की दरगाह में स्वीकार नहीं है :

— प्रीति प्रीति गुरीआ मोहन लालना ॥
जपि मन गोबिंद एकै अवरु नही को लेखै
संत लागु मनहि छाडु दुबिधा की कुरीआ ॥
(पन्ना ७४६)
— सो जपु सो तपु सा ब्रत पूजा
जितु हरि सिउ प्रीति लगाइ ॥ (पन्ना ७२०)

संक्षेप में कहा जा सकता है कि गुरबाणी के प्रति प्रेम तथा आदर की भावना के बिना नाम की प्राप्ति नहीं होती :

गुरबाणी वरती जग अंतरि
इसु बाणी ते हरि नामु पाइदा ॥ (पन्ना १०६६)

प्रभु के नाम को हृदय में बसाए बिना प्रभु-प्रेम को प्राप्त नहीं किया जा सकता। गुरबाणी के सम्मान का विशेष ध्यान रखना चाहिए। यह भी विचार करना चाहिये कि गुरबाणी का प्रचार करने के साथ-साथ हम उसका निरादर तो नहीं कर रहे। स्मरण रहे कि हृदय में गुरबाणी के लिए सत्कार-प्यार न हो तो गुरु-शबद के अनुसार जीवन-यापन न करने से उम्र भर मायिक धन्धों में लिप्त होकर चिंता-तनाव में जीवन व्यतीत हो जाता है। गुरु द्वारा, गुरबाणी द्वारा प्राप्त परमात्मा का ज्ञान एक ऐसी आत्मिक खुराक है, जो बहुत मधुर है। जिसने इसका आस्वादन किया है, जिसने प्यार-सत्कार की भावना से गुरु की शिक्षा से भरपूर गुरबाणी के रस का पान किया है, उसने प्रभु-प्रेम को प्राप्त कर लिया है। वह प्रभु की दृष्टि में कबूल हो गया है :

— गुर की साखी अंम्रित बाणी
पीवत ही परवाणु भइआ ॥ (पन्ना ३६०)
— भोजन गिआनु महा रसु मीठा ॥
जिनि चाखिआ तिनि दरसनु डीठा ॥
(पन्ना १०३२)

'अकाल उसतत' बाणी का आध्यात्मिक पक्ष

*-बीबी गुरप्रीत कौर**

'अकाल उसतत' श्री दसम ग्रंथ की दूसरी बाणी है। इसका स्थान 'जापु साहिब' बाणी के बाद है। इसमें परमात्मा की भक्ति का वर्णन किया गया है। यह भक्ति-प्रधान बाणी है।[१]

'अकाल उसतत' (अकाल पुरख की स्तुति) नामक इस बाणी के आरंभिक और अंतिम वाक्यों के आदि पदों को मिला कर रखा गया है। आरंभिक वाक्य है— *''अकाल पुरख की रछा हमनै ॥''* और अंत में लिखित है— ''उसतत संपूरणं'। अत: बाणी का नाम दृढ़ हुआ— ''अकाल उसतत''।[२]

श्री दसम ग्रंथ में इस बाणी के आरंभ में लिखा है :

उतारा खासे दसख़त का ॥ पातिसाही १० ॥
अकाल पुरख की रछा हमनै ॥
सरब लोह दी रछिआ हमनै ॥
सरब काल जी दी रछिआ हमनै ॥
सरब लोह जी दी सदा रछिआ हमनै ॥

भाव— हमें अकाल पुरख की रक्षा है अर्थात् अकाल पुरख का संरक्षण प्राप्त है। हमें सरब लोह रूप अकाल पुरख की रक्षा (संरक्षण) है, जो शक्ति का पुंज है। हमें सबसे सर्वकाल रूप प्रभु की रक्षा (संरक्षण) है। हमें सदा सरब लोह स्वरूप की रक्षा (संरक्षण) है। इस बाणी से गुरु साहिब का अकाल पुरख के प्रति अटूट विश्वास का पता चलता है। 'अकाल उसतत' बाणी में गुरु साहिब ने अकाल पुरख के गुण गाए हैं। उपरोक्त पंक्तियों में गुरु साहिब ने अकाल पुरख को 'सरब लोह' नाम से याद किया है।

यह 'सरब लोह' वही अकाल शक्ति है, जिसकी याद मानव को संत-सिपाही बनाती है। फिर 'सरब लोह' शस्त्र का भी प्रतीक है, जिसके द्वारा दुष्टों का संहार कर धर्म की रक्षा की जा सकती है। गुरु साहिब ने भक्ति करते हुए शक्ति उत्पन्न करने का नया मार्ग दिखाया है और 'अकाल उसतत' में गायी महिमा द्वारा भी शक्ति प्रकट करने का सार्थक यत्न किया है। गुरु साहिब ने कोई ऐसा कलात्मक कर्म नहीं किया, जो समाज के लिए उपयोगी न हो, जिससे मानव-समाज शक्ति प्राप्त कर शैतानी ताकतों के विरुद्ध लड़ न सके।[३].

**श्री गुरु ग्रंथ साहिब अध्ययन विभाग, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला-१४७००२, फोन : ९४६३९-०९५९३*

इस बाणी के कुल २७१ बंद हैं। एकाध बंद ऊपर है अर्थात् कुल २७१ १/२ बंद हैं। आदि में 'चौपई' है, जिसकी १० पउड़ियां हैं। इसकी आरंभता 'त्व प्रसादि' शब्द से है, जिसका तात्पर्य है— 'वाहिगुरु की कृपा'। आगे बाणी की आरंभता 'प्रणवो' शब्द से है :

प्रणवो आदि एकंकारा ॥
जल थल महीअल कीओ पसारा ॥
आदि पुरख अबिगत अबिनासी ॥
लोक चत्रु दस जोति प्रकासी ॥१ ॥

गुरु साहिब ने बाणी के आरंभ में अकाल पुरख को प्रणाम किया है तथा उसे सर्वव्यापक और घट-घट में बसा हुआ बताया है। वह सर्वव्यापक है, वह ज्ञानवान है और हर एक के दिल की जानने वाला है। उसका कोई रंग-रूप नहीं है। वह सबसे न्यारा है, काल से परे और परम सत्य है। वह सब रोगों का नाश करने वाला है। जिसने भी अकाल पुरख का ध्यान किया है, वह कभी जन्म-मरण के चक्र में नहीं आता, जैसे :

सभ को काल सभन को करता ॥
रोग सोग दोखन को हरता ॥
एक चित्त जिह इक छिन धिआइओ ॥
काल फास के बीच न आइओ ॥१० ॥

'चौपई' के बाद इस बाणी में १० कबित्त उच्चारण किए हैं। इनमें गुरु साहिब ने अकाल पुरख में एकता दर्शायी है कि वह कैसे सबमें एक है :

कहूं बेद रीत कहूं ता सिउ बिप्रीत
कहूं त्रिगुन अतीत कहूं
सुरगुन समेत हो ॥१ ॥११ ॥

अर्थात् कहीं तू वेदों की रीति का अनुसरण करने वाला है और कहीं उनसे विपरीत है। कहीं तू तीनों गुणों से परे है और कहीं सब गुणों से युक्त है।

गुरु साहिब इस बाणी में बताते हैं कि कहीं अकाल पुरख इन महाराजाओं को असंख्य धरती प्रदान करते हैं और कहीं इनसे छीन लेते हैं। अकाल पुरख सर्वसमर्थ है। सभी रहमतें देने और सभी की रक्षा करने वाला है। सर्व-समर्थ अकाल पुरख की स्तुति गुरु साहिब ने इस प्रकार की है :

निरजुर निरूप हो कि सुंदर सरूप हो
कि भूपन के भूप हो
कि दाता महा दान हो ॥...९ ॥१९ ॥

१० कबित्तों के बाद १० सवय्ये हैं। ये सवय्ये अमृत तैयार करते समय भी पढ़े जाते हैं। ये सवय्ये हमारे रोज़ाना के नित्तनेम की तीसरी पवित्र बाणी हैं। इन सवय्यों में गुरु साहिब ने कर्मकांडों का खंडन किया है :

स्रावग सुद्ध समूह सिधान के
देखि फिरिओ घर जोग जती के ॥
सूर सुरारदन सुद्ध सुधादिक
संत समूह अनेक मती के ॥...१ ॥२१ ॥

गुरु साहिब बताते हैं कि प्रेमा-भक्ति के बिना आँखें बंद कर, बगुले की भांति समाधि लगाना या तीर्थों पर स्नान करना या व्यर्थ की विचार-चर्चा में भाग लेने से अकाल पुरख की भक्ति संभव नहीं हो सकती। उसकी प्राप्ति तो केवल प्रेम-श्रद्धा द्वारा ही हो सकती है :

कहा भयो जो दोऊ लोचन मूंद कै
बैठि रहिओ बक धिआन लगाइओ ॥
न्हात फिरिओ लीए सात समुद्रनि
लोक गयो परलोक गवाइओ ॥
बास कीओ बिखिआन सों बैठ कै
ऐसे ही ऐसे सु बैस बिताइओ ॥
साचु कहों सुन लेहु सभै
जिन प्रेम कीओ तिन ही प्रभ पाइओ ॥९ ॥२९ ॥

गुरु साहिब फरमान करते हैं कि मैं सत्य कहता हूँ, सभी ध्यान लगा कर सुन लो कि जिन्होंने परमात्मा के साथ प्रेम का सम्बन्ध बनाया है, उन्होंने ही अकाल पुरख को पाया है।

इन सवय्यों के बाद 'अकाल उसतत' बाणी में २० 'तोमर छंद' हैं, जिनमें गुरु साहिब ने अकाल पुरख के गुणों का व्याख्यान किया है और बताया है कि वाहिगुरु के बिना सब देवी-देवता, धर्म-ग्रंथ, अवतार, तीर्थ-स्नान और धार्मिक कर्मकांड व्यर्थ हैं :

जिह कीन जगत पसार ॥
रचिओ बिचार बिचार ॥
अनंत रूप अखंड ॥
अतुल प्रताप प्रचंड ॥६ ॥३६ ॥

तात्पर्य— जिस (परमात्मा) ने जगत का पसार किया है, (जिसने हर एक) विचार को विचारपूर्वक रचा है, जो अं त और अखंड रूप वाला है और जिसका प्रताप अतुल्य एवं प्रचंड है, लोग ऐसे परमात्मा की प्राप्ति के लिए कई प्रकार के कर्मकांड करते हैं :

कई अगन होत्र करंत ॥
कई उरध ताप दुरंत ॥. . .
कहूं करत जल महि जाप ॥
कहूं सहत तन पर ताप ॥१५ ॥४५ ॥

गुरु साहिब इन कर्मकांडों को व्यर्थ बता कर उपदेश करते हैं :

सभ करम फोकट जान ॥
सभ धरम निहफल मान ॥
बिन एक नाम अधार ॥
सभ करम भरम बिचार ॥२० ॥५० ॥

अर्थात् ये (उपरोक्त बाणी में बताए गए) कर्मकांड सब व्यर्थ हैं, सभी (कर्मकांडी) धर्म निष्फल हैं, क्योंकि अकाल पुरख के नाम के बिना सभी कर्म भ्रम-मात्र हैं।

इसके बाद २० 'लघु निराज छंद' हैं जिनमें गुरु साहिब ने अकाल पुरख के सर्वव्यापक होने का ज़िक्र किया है :

जले हरी ॥ थले हरी ॥
उरे हरी ॥ बने हरी ॥१ ॥५१ ॥

गिरे हरी ॥ गुफे हरी ॥ छिते हरी ॥ नभे हरी ॥. . .
तुहीं तुहीं ॥ तुहीं तुहीं ॥
तुहीं तुहीं ॥ तुहीं तुहीं ॥१९ ॥६९ ॥
तुहीं तुहीं ॥ तुहीं तुहीं ॥
तुहीं तुहीं ॥ तुहीं तुहीं ॥२० ॥७० ॥

उपरोक्त से आगे २० 'कबित्त' हैं, जिनमे कर्मकांड को व्यर्थ बताया गया है :

निउली करम जल होम पावक पवन होम
अधो मुख एक पाइ ठाढे न बहत हैं ॥
मानव फनिंद देव दानव न पावै भेद
बेद औ कतेब नेत नेत कै कहत हैं ॥५ ॥७५ ॥

गुरु साहिब बताते हैं कि कई लोग परमात्मा की भक्ति के लिए न्युली कर्म करते हैं, कई जल, अग्नि तथा पवन से संबंधित होम करते हैं, कई उलटे सिर लटक कर और कई एक पैर पर खड़े होकर समय को गुज़ारते हैं। प्रभु को पाने के लिए ये सभी कार्य भ्रम-मात्र हैं। (प्रभु का) भेद मानव, शेषनाग, देवता और दैत्य नहीं पा सकते और वेद-कतेब भी असंख्य लोग कहते हैं। ऐसे असीम प्रभु की प्राप्ति कर्मकाडों से नहीं हो सकती।४

विभिन्न धर्मों को मानने वाले लोग, विभिन्न देशों में रहने वाले सब मानव, रंग-रूप से परे सभी मानव एक ही परमात्मा की ज्योति हैं। धर्म-कर्म और पूजा-विधियों की भिन्नतायों की भावना के पाखंड-जाल, मानव-मानव में फूट डाल कर, धार्मिक अहं और धार्मिक कट्टरता को उत्पन्न कर दैवी विधान की केंद्रीय सभ्यता ''एक ही सरूप सभै एकै जोति जानबो'' के विपरीत हो जाता है :

कोऊ भइओ मुंडीआ संनिआसी
कोऊ जोगी भइओ
कोऊ ब्रहमचारी कोऊ जती अनुमानबो ॥
हिंदू तुरक कोऊ राफजी इमाम साफी मानस की जात सबै एकै पहिचानबो ॥...१५ ॥८५ ॥

इससे आगे गुरु जी ने बताया है कि सभी धर्म-द्वार वास्तव में एक ही परमात्मा की आराधना में लगे हुए हैं। सभी मानव समान हैं। उनका स्वरूप समान है। सभी पाँच भूतों (तत्वों) से बने हुए हैं। सबका न्यारा-न्यारा रूप होने के बावजूद भी इन सबकी अंतिम समाई परमात्मा में ही है। इस बात को स्पष्ट करने के लिए गुरु जी ने आग की चिंगारियों, धूल के कणों, पानी की लहरों के दृष्टांत के माध्यम से विश्व के समूचे पदार्थों के मूल सत्ता में विलीन होने की बात को बड़े तर्कमयी ढंग से स्पष्ट किया है।[५].

जैसे एक आग ते कनूका कोट आग उठे
निआरे निआरे हुइ कै फेरि आग मै मिलाहिंगे ॥
जैसे एक धूर ते अनेक धूर पूरत है
धूर के कनूका फेर धूर ही समाहिंगे ॥
जैसे एक नद ते तरंग कोट उपजत हैं
पान के तरंग सबै पान ही कहाहिंगे ॥
तैसे बिस्व रूप ते अभूत भूत प्रगट हुइ

ताही ते उपज सबै
ताही मै समाहिंगे ॥...१७ ॥८७ ॥

इसके बाद ३० 'भुजंग प्रयात छंद' उच्चारण किए गए हैं, जिनमें अकाल पुरख की बेअंतता दिखाई गई है :

न रागं न रंगं न रूपं न रेखं ॥
न मोहं न क्रोहं न द्रोहं न द्वैखं ॥
न करमं न भरमं न जनमं न जातं ॥
न मित्रं न सत्रं न पित्रं न मातं ॥१ ॥९१ ॥

इससे आगे २० 'पाधड़ी छंद' हैं, जिनमें गुरु साहिब ने नाम की महानता बतायी है। उन्होंने संसार में फैले कर्मकांडों का खंडन किया है। वाहिगुरु के नाम के बिना सभी कर्म बेकार दिखाए गए हैं।

'पाधड़ी छंदों' के बाद २० 'तोटक छंद' हैं। इन तोटक छंदों में भी एक अकाल पुरख की स्तुति की गई है। वाहिगुरु को ही सारी सृष्टि का कर्त्ता बता कर उसकी स्तुति की गई है :

जिह अंडहि ते ब्रहिमंड रचिओ ॥
दिस चार करी नव खंड सचिओ ॥
रज तामस तेज अतेज कीओ ॥
अनभउ पद आप प्रचंड लीओ ॥६ ॥१४६ ॥

इनसे आगे २० 'नराज़ छंदों' का उच्चारण है :

न जंत्र मै न तंत्र मै न मंत्र बसि आवई ॥
पुरान औ कुरान
नेति नेति कै बतावई ॥...५ ॥१६५ ॥

इनसे आगे २० 'रूआल छंद' हैं, जिनमें परिपूर्ण परमात्मा की बेअंतता बतायी है :

सरब करता सरब हरता सरब ते अनकाम ॥
सरब खंडण सरब दंडण सरब के निज भाम ॥...१५ ॥१६५ ॥

इन छंदों के अलावा १० 'दोहरे' हैं। इन 'दोहरों' का रूप प्रश्नोत्तरी वाला है :

कहा नेम संजम कहा कहा गिआन अगिआन ॥
को रोगी सोगी कवन कहा धरम की हान ॥९ ॥२०९ ॥
दोहरा ॥ को सूरा सुंदर कवन कहा जोग को सार ॥
को दाता गिआनी कवन कहो बिचार अबिचार ॥

अर्थात् नियम क्या है ? संयम क्या है ? ज्ञान और अज्ञान क्या है ? रोगी कौन है ? सोगी कौन है और धर्म की हानि कहाँ होती है ? योद्धा कौन है ? सुंदर कौन है और योग का सार क्या है ? कर्त्ता कौन है ? ज्ञानी कौन है ? इनका विचार-अविचार (मुझे) बताओ ।६

इनके बाद 'दीरघ त्रिभंगी छंद' हैं। इनमें उन्होंने अकाल पुरख की उस शक्ति को बयान किया है जिस शक्ति से वो दुष्टों को दंड देता है और स्वरूप धारण करता है, जैसे :

चंडासुर चंडण मुंड बिमुंडण
खंड अखंडण खून खिते ॥

दामनी दमंकणि धुजा फरंकणि
फणी फुकारणि जोध जिते ॥...४॥२१४॥

उपरोक्त के बाद १२ 'पाधड़ी छंद' उच्चारण किए गए हैं, जिनमें परमात्मा के गुण दिखाए गए हैं और बताया गया है कि सभी देवी-देवता अकाल पुरख का गुणगान करते हैं।

इससे अगले दस सवय्ये ''दीनन की प्रतिपाल करै'' वाले हैं। इनमें परमात्मा के निराकार रूप को चित्रित किया गया है। इन सवय्यों में स्पष्ट किया गया है कि तीर्थ-स्नान करने, दान देने, तपस्या करने, जटा रखने और योग-आसन करने से परमात्मा प्राप्त नहीं हो सकता है। परमात्मा की प्राप्ति के लिए तो निष्काम भक्ति करनी पड़ती है।

इससे आगे १४ 'कबित्त' हैं, जिनमें जातियों, संप्रदायों का ज़िक्र कर गुरु जी ने अनेक प्रकार की सांस्कृतिक, भौगोलिक स्थिति और भाषाओं का वर्णन किया है। अनेकता के पीछे अस्तित्व एक अकाल पुरख का ही दर्शाया है।

आखिर में पाँच पूरे और एकाध 'पाधड़ी छंद' उच्चारण किया गया है। इस प्रकार इस बाणी में कुल २७१ १/२ छंद हैं।

सारांश : 'अकाल उसतत' बाणी में अकाल पुरख के असंख्य गुण गायन किये गए हैं। इसमें परमात्मा को निरविकार, निरआकार, निर्गुण, सर्वव्यापक, घट-घट में निवास करने वाला आदि रूप में चित्रित किया गया है। अकाल पुरख सबके लिए एक-सा है, किसी के साथ भेदभाव नहीं करता, सभी में समाया है। उसे प्राप्त करने के लिए प्रेम ही एकमात्र साधन है :

साचु कहों सुन लेहु सभै जिन प्रेम कीओ
तिन ही प्रभ पाइओ ॥

हवाला-सूची :

१. गुरशरन कौर (जग्गी) (डॉ.), गुरमति विचारधारा, गुरमति प्रकाशन, अरबन अस्टेट, पटियाला, पहली बार २००७, पृष्ठ ८५

२. तारन सिंघ (डॉ.), दसम ग्रंथ : रूप ते रस, गुरू गोबिंद सिंघ फाउंडेशन, चंडीगढ़, पहली बार १९६७, पृष्ठ ७३

३. मल्ल सिंघ ज्ञानी, श्री दसम ग्रंथ बोध, भाग दूसरा, भाई चतर सिंघ जीवन सिंघ, श्री अमृतसर, पहली बार २०१२, पृष्ठ ६६

४. उपरोक्त, पृष्ठ ४९

५. गुरशरन कौर (जग्गी) (डा.), उपरोक्त पृष्ठ ८७

६. रतन सिंघ (जग्गी) (डा.), श्री दसम ग्रंथ साहिब : पाठ ते संपादन अते व्याख्या, भाग प्रथम, गोबिंद सदन, महरौली, नयी दिल्ली, पहली बार १९९९, पृष्ठ ८३.

खबरनामा

एडवोकेट स. हरजिंदर सिंघ शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के 44वें प्रधान बने

श्री अमृतसर : २९ नवंबर : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के मुख्यालय सरदार तेजा सिंघ समुंदरी हाल में हुए सालाना जनरल इजलास के दौरान एडवोकेट स. हरजिंदर सिंघ (धामी) को नया प्रधान चुना गया। वे शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के ४४वें प्रधान बने हैं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की हजूरी में हुए इजलास के दौरान स. सुरजीत सिंघ भिट्टेवड्ड ने एडवोकेट हरजिंदर सिंघ का नाम प्रधान पद के लिए पेश किया, जिसकी ताईद एडवोकेट भगवंत सिंघ सिआलका और मजीद स. रविंदर सिंघ खालसा ने की। इसी दौरान विरोधी पक्ष की तरफ से स. अमरीक सिंघ शाहपुर ने स. मिट्ठू सिंघ काहनेके का नाम प्रधान पद के लिए पेश किया। मतदान के बाद एडवोकेट स. हरजिंदर सिंघ को १२२ मत और स. मिट्ठू सिंघ काहनेके को १९ मत प्राप्त हुए, जबकि १ मत रद्द हुआ।

जनरल इजलास के दौरान स. रघूजीत सिंघ (विर्क) वरिष्ठ उपाध्यक्ष चुने गए। उनका नाम स. बलजीत सिंघ जलालउसमा ने पेश किया। ताईद स. गुरमीत सिंघ बूह और ताईद मजीद स. रविंदर सिंघ खालसा द्वारा की गई। इसी प्रकार प्रिंसिपल सुरिंदर सिंघ को कनिष्ठ उपाध्यक्ष चुना गया। उनका नाम स. सुखहरप्रीत सिंघ रोडे ने पेश किया, जिसकी ताईद भाई अमरजीत सिंघ (चावला) और मजीद स. निरमल सिंघ हरिआओ ने की। महासचिव के तौर पर स. करनैल सिंघ पंजोली को चुना गया। स. पंजोली का नाम स. दलजीत सिंघ भिंडर ने पेश किया, जिसकी ताईद स. अजमेर सिंघ खेड़ा और मजीद स. अवतार सिंघ रिआ द्वारा की गई। महासचिव का चयन भी मतदान-प्रक्रिया द्वारा हुआ, परन्तु स. करनैल सिंघ पंजोली ११२ मत लेकर विजेता रहे। स. पंजोली के मुकाबले में स. गुरप्रीत सिंघ केवल २१ मत ही प्राप्त कर सके। महासचिव के लिए हुए मतदान में १ मत रद्द हुआ।

जनरल इजलास के दौरान कार्यकारिणी कमेटी के ११ सदस्य भी चुने गए। कार्यकारिणी कमेटी के सदस्यों में स. सुरजीत सिंघ (कंग), स. सरवण सिंघ कुलार, स. सुरजीत सिंघ गढ़ी, स. जरनैल सिंघ डोगरांवाला, स. बलविंदर सिंघ वेईंपूईं, स. हरजाप सिंघ सुलतानविंड, स. गुरिंदरपाल सिंघ गोरा, स. अमरजीत सिंघ बंडाला, बीबी गुरप्रीत कौर, स. जोध सिंघ समरा व बाबा गुरप्रीत सिंघ को शामिल किया गया।

धर्म-प्रचार, स्वास्थ्य और शिक्षा-सेवाओं को दृढ़ता के साथ आगे बढ़ाएंगे : प्रधान

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का प्रधान चुने जाने के बाद प्रेस के साथ बातचीत करते हुए एडवोकेट स. हरजिंदर सिंघ ने कहा कि वर्तमान समय में चल रही धर्म प्रचार लहर को प्रचंड रूप में आगे बढ़ाने के साथ-साथ स्वास्थ्य और शिक्षा को भी वर्तमान समय के अनुसार नयी दिशा प्रदान की जायेगी। उन्होंने कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक

कमेटी सबकी सांझी संस्था है और हर सिक्ख को इसके कार्यों में सहयोगी बनना चाहिए। उन्होंने कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान की सेवा और कार्य बड़ी ज़िम्मेदारी वाला है और वे इसे निभाने के लिए संगत का सहयोग प्राप्त करेंगे। उन्होंने कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के जनरल हाऊस की एक मर्यादा है, परंतु दुख की बात है कि विरोधी सदस्य गुरु साहिब के सम्मान को भूल कर हुल्लड़बाज़ी करते हैं। उन्होंने कहा कि हम गुरु साहिब की हुज़ूरी में मर्यादा की उल्लंघना करने की सख़्त शब्दों में निंदा करते हैं। उन्होंने कहा कि किसी भी मामले पर विचार की जा सकती है, परंतु दुख की बात है कि विचार करने की जगह जानबूझ कर विरोधियों द्वारा माहौल ख़राब किया जाता है। उन्होंने कहा कि कुछ सदस्यों द्वारा माहौल ख़राब करने के कारण जनरल हाऊस के सामने कुछ अहम प्रस्ताव भी नहीं रखे जा सके। उन्होंने कहा कि यह सिक्ख कौम का सुप्रीम हाऊस है और यहाँ से उठाई गई हर माँग बड़े अर्थ रखती है, परन्तु जब कुछ लोग राजनीतिक लाभ की ख़ातिर यहाँ रखी जाने वाली बात के लिए माहौल नहीं बनने देते, तो इसका नुकसान समूची कौम को होता है। एडवोकेट स. हरजिंदर सिंघ ने प्रधान चुने जाने पर गुरु साहिब का शुक्राना करने के साथ-साथ शिरोमणि अकाली दल के सरप्रस्त स. प्रकाश सिंघ बादल, दल के प्रधान स. सुखबीर सिंघ बादल, सीनियर अकाली नेताओं और शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के समूह सदस्यों का हार्दिक तौर पर धन्यवाद किया।

किसानी आंदोलन ने भाईचारक रिश्ते के बंधन को और भी मजबूत किया : एडवोकेट स. हरजिंदर सिंघ धामी

श्री अमृतसर : १३ दिसंबर : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तरफ से किसानी संघर्ष की जीत के शुक्राने के तौर पर सचखंड श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब परिसर में सुस्थित गुरुद्वारा श्री मंजी साहिब दीवान हाल में श्री अखंड पाठ साहिब के भोग के पश्चात विशेष समागम आयोजित किया गया, जिसमें शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट स. हरजिंदर सिंघ सहित शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सदस्य साहिबान और विभिन्न जत्थेबंदियों के किसान नेताओं ने विशेष तौर पर हाज़िरी भरी। इस अवसर पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तरफ से किसानी संघर्ष में मुख्य भूमिका निभाने वाले संयुक्त किसान मोर्चे की किसान जत्थेबंदियों के नेताओं का विशेष तौर पर सम्मान किया गया। इससे पहले शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट स. हरजिंदर सिंघ ने श्री दरबार साहिब के बाहर बने प्लाज़ा में किसान नेताओं का हादिक रूप से स्वागत किया।

आयोजित समागम में संगत समूह को संबोधित करते हुए एडवोकेट स. हरजिंदर सिंघ ने कहा कि गुरु साहिब जी की अपार कृपा से किसानी संघर्ष में विजय प्राप्त हुई है। उन्होंने कहा कि यह गुरु साहिब की बख़शीश थी कि श्री गुरु नानक देव जी के प्रकाश गुरुपर्व के शुभ अवसर पर देश के प्रधानमंत्री ने भारत

सरकार द्वारा बनाए तीन काले कानून वापस लेने का एलान किया है। उन्होंने कहा कि इस किसानी आंदोलन ने इतिहास को दोबारा ज़िंदा किया है। उन्होंने कहा कि सरकार के अड़ियल रवैये के कारण ७०० से अधिक किसानों ने अपनी जान गंवाई है और सरकार को आखिर झुकना ही पड़ा। उन्होंने कहा कि इस आंदोलन ने भाईचारक सांझ के बंधन को और भी मज़बूत किया है। हरियाणा ने अपने छोटे भाई होने का सबूत देते हुए हर कठिनाई के समय डटकर सहयोग किया। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने समूचे देश को किसानी संघर्ष की जीत पर बधाई देते हुए विदेश में बसते पंजाबियों द्वारा संघर्ष में दिए भरपूर सहयोग के लिए धन्यवाद भी किया।

इस दौरान भारतीय किसान यूनियन (राजेवाल) के प्रधान स. बलबीर सिंघ राजेवाल ने किसान जत्थेबंदियों की तरफ से संबोधित होते हुए कहा कि किसानी मोर्चे के दौरान अनेक कठिनाइयाँ आईं, परन्तु परमात्मा की कृपा से किसानों की हर कठिनाई दूर हुई। स. राजेवाल ने कहा कि इस मोर्चे की जीत ने पंजाबियों के इतिहास की ३०० वर्ष पुरानी याद को पुन: ताज़ा किया है। उन्होंने कहा कि इस मोर्चे में हरियाणा, उत्तर प्रदेश सहित देश के प्रत्येक राज्य के किसानों ने भरपूर सहयोग दिया है। स. राजेवाल ने किसान जत्थेबंदियों के नेताओं को सम्मानित करने के लिए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का विशेष तौर पर धन्यवाद किया।

इससे पहले आयोजित समागम में सचखंड श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब के हज़ूरी रागी भाई सिमरप्रीत सिंघ के जत्थे द्वारा गुरबाणी-कीर्तन किया गया और भाई हरपाल सिंघ ढंड के ढाडी जत्थे ने ढाडी वारें गायन कर संगत को निहाल किया।

इस दौरान किसान नेता श्री राकेश टिकैत, श्री लखनपाल और श्री युद्धवीर सिंह को भी शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के मुख्यालय में पहुँचने पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट स. हरजिंदर सिंघ और सदस्य साहिबान द्वारा सम्मानित किया गया। इस अवसर पर श्री राकेश टिकैत ने कहा कि उनकी इच्छा थी कि किसानी मोर्चे के विजय प्राप्त होने के बाद वे सचखंड श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब में शुक्राना करने के बाद ही घर जाएंगे। उन्होंने गुरु साहिबान के चरणों में अरदास करते हुए भविष्य में भी मार्गदर्शन हेतु प्रार्थना की। उन्होंने कहा कि गुरु साहिब जी के इस पवित्र स्थान से अरदास कर यह मोर्चा शुरू हुआ था और गुरु साहिब की बख़शीश सदका ही मोर्चे में विजय प्राप्त हुई है। उन्होंने सम्मान के लिए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान का धन्यवाद किया। श्री युद्धवीर सिंह ने भी शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा दी गई सेवाओं के लिए धन्यवाद किया।

आयोजित समागम में श्री अकाल तख़्त साहिब के अपर मुख्य ग्रंथी ज्ञानी मलकीत सिंघ, कथावाचक ज्ञानी जसवंत सिंघ, कार्यकारिणी कमेटी के सदस्य स. हरजाप सिंघ सुलतानविंड, स. जरनैल सिंघ डोगरांवाला, स. अमरजीत सिंघ बंडाला, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के सदस्य भाई रजिंदर सिंघ महिता, एडवोकेट स. भगवंत सिंघ सिआलका, भाई मनजीत सिंघ, भाई राम सिंघ, स. अमरजीत सिंघ भलाईपुर, स. बावा सिंघ गुमानपुरा, स. अमरीक सिंघ विछोआ, बाबा चरनजीत सिंघ जस्सोवाल, स. कुलदीप सिंघ तेड़ा, भाई अजाइब सिंघ अभ्यासी, स.

सुखवरश सिंघ पन्नू, ज्ञानी जसबीर सिंघ, अकाली नेता स. तलबीर सिंघ, स. गुरप्रताप सिंघ टिक्का, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के सचिव स. महिंदर सिंघ आहली, अतिरिक्त सचिव स. सुखदेव सिंघ भूराकोहना, स. प्रताप सिंघ, ओएसडी स. सतबीर सिंघ (धामी), उप सचिव स. कुलविंदर सिंघ रमदास, स. बलविंदर सिंघ काहलवां, स. सिमरजीत सिंघ (कंग), स. गुरमीत सिंघ बुट्टर, स. तजिंदर सिंघ पड्डा, स. सुखबीर सिंघ, श्री दरबार साहिब के मैनेजर स. गुरिंदर सिंघ मथरेवाल, सुप्रिंटेंडेंट स. मलकीत सिंघ बहिड़वाल, फेडरेशन के प्रधान स. कंवरचढ़त सिंघ सहित बड़ी संख्या में किसान नेता व संगत उपस्थित थी।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा किसान नेताओं को विशेष तौर पर किया गया सम्मानित

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने गुरुद्वारा श्री मंजी साहिब दीवान हाल में विशेष तौर पर आयोजित समागम में संयुक्त किसान मोर्चे के नेताओं को सम्मानित किया। यह सम्मान शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट स. हरजिंदर सिंघ और शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सदस्य साहिबान ने किसान नेताओं को दिया। सम्मान में गुरु-बख़शीश सिरोपायो और सचखंड श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब का सुनहरी माडल देकर सम्मानित किया गया। सम्मान प्राप्त करने वाले नेताओं में स. बलबीर सिंघ राजेवाल, पूर्व जत्थेदार ज्ञानी जसबीर सिंघ रोडे, स. गुरनाम सिंघ चड़ूनी, श्री राकेश टिकैत, डॉ. सवैमान सिंघ, श्री दर्शनपाल, श्री युद्धवीर सिंह, स. कुलवंत सिंघ (संधू)की तरफ स. प्रगट सिंघ, स. बूटा सिंघ बुर्ज गिल, स. मनजीत सिंघ राय, स. रुलदू सिंघ मानसा, स. बलदेव सिंघ निहालगढ़, स. निरभै सिंघ ढुड्डीके, स. हरजिंदर सिंघ टांडा, स. हरमीत सिंघ कादियाँ, स. कुलदीप सिंघ वजीदपुर, स. बलवंत सिंघ, श्री मुकेश चंद्र शर्मा, स. जगवीर सिंह चौहान, स. किरपा सिंघ, स. सुखपाल सिंघ डोफर, स. हरपाल सिंघ संघा, स. मेजर सिंघ पुन्नावाला, स. बलविंदर सिंघ औलख, स. किरनजीत सिंघ सेखों, स. बोघ सिंघ मानसा, स. मनजिंदर सिंघ बुट्टर, स. सुच्चा सिंघ, स. हरदेव सिंघ संधू, स. बलदेव सिंघ ज़ीरा, स. कंवलप्रीत सिंघ पन्नू, स. गुरबख़श सिंघ बरनाला, स. हरिंदर सिंघ, स. गुरमेल सिंघ, स. गुरप्रीत सिंघ कट्टियांवाली, बीबी जेबा ख़ान झारखंड, स. मनदीप सिंघ नथवान, स. बलजिंदर सिंघ बिट्टू आदि शामिल थे।

इस दौरान कबड्डी जगत की नामवर शख़्सियतों, जिन्होंने किसानी संघर्ष में लगातार सेवा निभाई, को भी विशेष तौर पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट स. हरजिंदर सिंघ द्वारा सम्मानित किया गया। इन शख़्सियतों में प्रसिद्ध खेल प्रमोटर टोनी संधू रुड़क कलाँ जलंधर, स. गुरपाल सिंघ पाला खेल प्रमोटर, स. मंग सिंघ मंगी अंतर्राष्ट्रीय कबड्डी प्लेयर, तरिंदरजीत सिंघ, भुपिंदर सिंघ भिंदा, मनजोत सिंघ आदि शामिल थे।

तख़्त श्री दमदमा साहिब,
तलवंडी साबो, ज़िला बठिंडा

Registered with RNI at No. PUNHIN/2007/21665

Postal Registration No. L-1/PB-ASR/008/2020-22 Licensed to Post without Pre-Payment No. PB/R-001/2020-22

GURMAT GYAN

January 2022

DHARAM PARCHAR COMMITTEE,

Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee, Sri Amritsar Sahib (PUNJAB)

तख़्त सचखंड श्री हज़ूर अबिचल नगर साहिब, नांदेड़ (महाराष्ट्र)

Owner : Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee. Publisher & Printer : S. Manjit Singh. Printed at Golden Offset Press, Gurdwara Sri Ramsar Sahib, Sri Amritsar. Published from SGPC office, Teja Singh Samundri Hall, Sri Amritsar. Editor : Satwinder Singh

Date: 7-1-2022